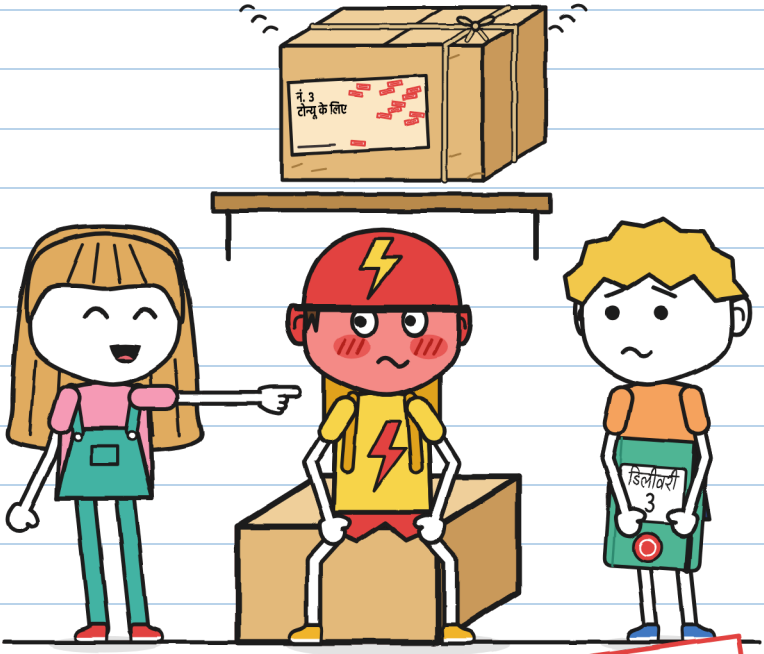
नामुमकिन डिलीवरी · 3

वापस भेजिए, प्लीज़

LinguAula



(मुनी की डायरी)

साइज़ M
मध्यम स्तर · 9+

नामुमकिन डिलीवरी · 3
वापस भेजिए, प्लीज़

लेखन और चित्र: LinguAula

साइज़ M · *मध्यम स्तर* · 9+

हिन्दी संस्करण: LinguAula

पहला संस्करण: 2026

© 2026 LinguAula · info@linguaula.com

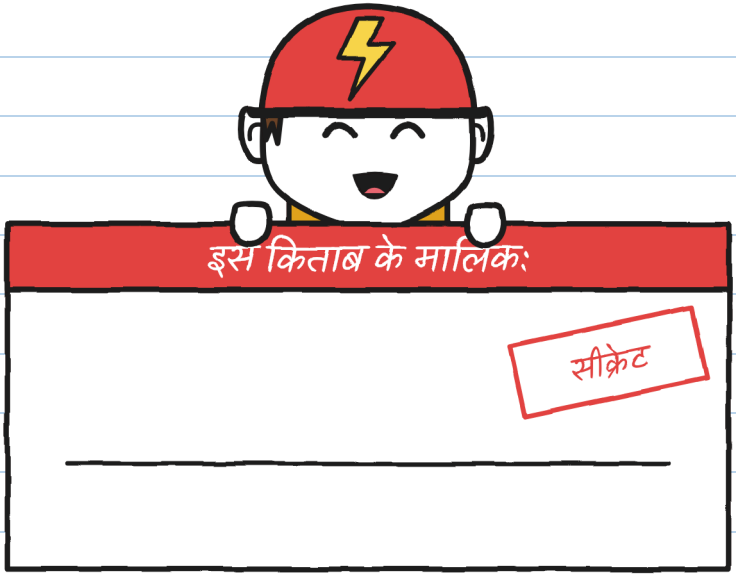
कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

सीरीज़ की तीसरी किताब। पिछली दोनों: "यह पार्सल काटता है" और "बादल गरजने से पहले न खोलें"।

LinguAula

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com *पर करो*

इस किताब को लिखते समय किसी डिलीवरी वाले को चोट नहीं लगी। हाँ, एक लाल ज़रूर पड़ गया। —ज.



और उसे पहले मैं पढ़ती हूँ। –ज.

अगर यह तुम्हें मिल जाए, तो लौटा देना। प्लीज़।

सिर्फ़ कहानी में

यह मुहर उसे चिह्नित करती है जो सिर्फ़ कहानी में होता है: असली पार्सल उड़कर वापस नहीं आते। असली साइकिल हो, तो पेज 76 देखो। –ज.

कौन कौन है



गुनी। शनिवार का डिलीवरी बॉय। ऐसी चीज़ों के चित्र बनाता है जो किसी ने माँगी नहीं। यह डायरी उसी की है।



ज़ूलिता। हरे रंग से लिखती है और "ज़." से दस्तख़त करती है। उसे हमेशा पता होता है कि मदद कैसे करनी है। यही तो समस्या है।



टोन्यो। साइकिल पर "बिजली" के लिए डिलीवरी करता है। दस मिनट में या मुफ़्त। हिस्सों में लाल होता है।



माशा। नामुमकिन डिलीवरी की मालकिन। जादूगरनी वाली टोपी पहनती है। जितना बताती है, उससे ज़्यादा जानती है।



ज़ोई। "बिजली" वाली। सबसे तेज़। सबके निकनेम वही रखती है।



ब्रूनो। "बिजली" वाला। एक बार पंक्चर हुआ था। दो साल पहले।



पार्सल नं. 3। हिलाओ तो बजता है। लेबल पर बस एक नाम लिखा है।

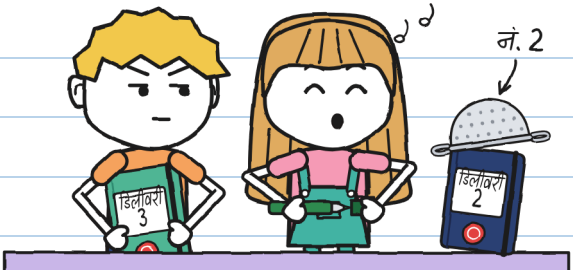


R. की तरफ़ से वे पार्सल भेजे जाते हैं जिन्हें कोई नहीं पहुँचा पाता। कोई उसका नाम नहीं लेता।

डिलीवरी डायरी 3
गुनी की

सीक्रेट।

"सीक्रेट" का मतलब है कि इसे पहले मैं पढ़ती हूँ। और किसी को बताती नहीं। –ज.



डायरी नंबर 2 एक ही तूफ़ान में ख़त्म हो गई। यह हरी है और इस पर भी दुकान की मुहर है। इसे पहले मुझे इस्तेमाल करना था। कर लिया जूलिता ने।

तुम्हारी मदद के लिए मैंने इसे शुरू किया। शुक्रिया नहीं चाहिए। –ज.

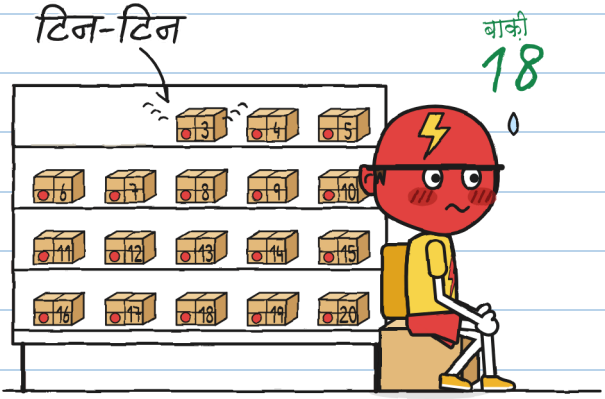
मैंने मदद नहीं माँगी थी। जूलिता के साथ इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता।

अध्याय 1

टिन-टिन

मारा की दुकान में कुछ पार्सल हैं जिन्हें कोई नहीं पहुँचा पाया। वे एक शेल्फ़ पर रखे हैं। वे बीस थे। जूलिता और मैंने दो पहुँचा दिए: ड्रैगन का एक अंडा और कुछ भागते हुए बीज। बाक़ी अठारह हैं।

तूफ़ान की रात, जब हम घर जाने ही वाले थे, उन पार्सलों में से एक बज उठा।
टिन-टिन।



वह नं. 3 था। और टोन्यो, जो "बिजली" के लिए दस मिनट में या मुफ़्त डिलीवरी करता है, अपने हेलमेट के रंग जैसा लाल हो गया।

वापस आए पार्सल सुबह होते ही उड़कर अपने शेल्फ़ पर लौट आते हैं, अगर दस्तख़त न हों। सिर्फ़ उसके दस्तख़त चलते हैं जिसे पार्सल मिला है। लेबल पर, कभी न मिटने वाली स्याही से। R. प्रेषक है: वही उन्हें भेजता है।

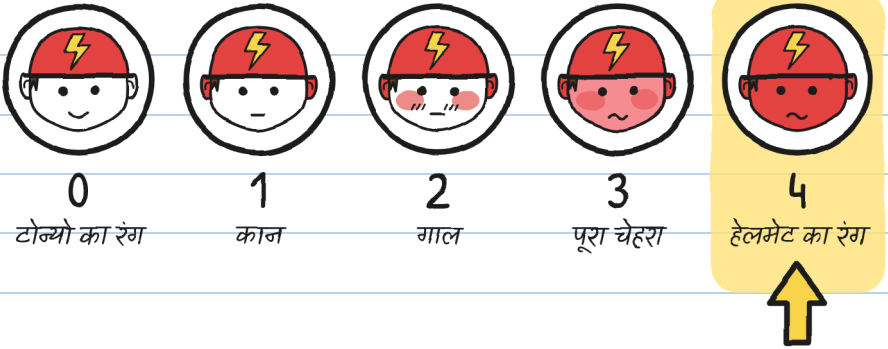


जूलिता लेबल पढ़ने लगी:
"टो..."
और उसने मुँह बंद कर लिया। जूलिता कभी किसी शब्द के बीच में चुप नहीं होती। मैंने टोन्यो को देखा: वह लाल हो रहा था।

मैंने उसे आधा पढ़ा। बाक़ी आधा निगल गई। —ज.

कुछ लोग अचानक लाल हो जाते हैं। टोन्यो नहीं: टोन्यो हिस्सों में लाल होता है। मैंने इसे लिख लिया।

टोन्यो का लाल-मीटर



"वह पार्सल इंतज़ार कर सकता है," टोन्यो ने बहुत जल्दी-जल्दी कहा। "सालों से इंतज़ार ही कर रहा है, है न? तो एक दिन और। या दस। 'बिजली' को कोई जल्दी नहीं है।"
मैंने "बिजली" के किसी इंसान को पहली बार यह कहते सुना था।

उस रात: 4। मैं इसे लाल रंग से लिखूँगी। मेरे पास सिर्फ़ हरा है। –ज.

"आज रात कुछ नहीं खुलेगा," मारा ने कहा। "और शेल्फ़ को बिना इजाज़त कोई नहीं छुएगा।"

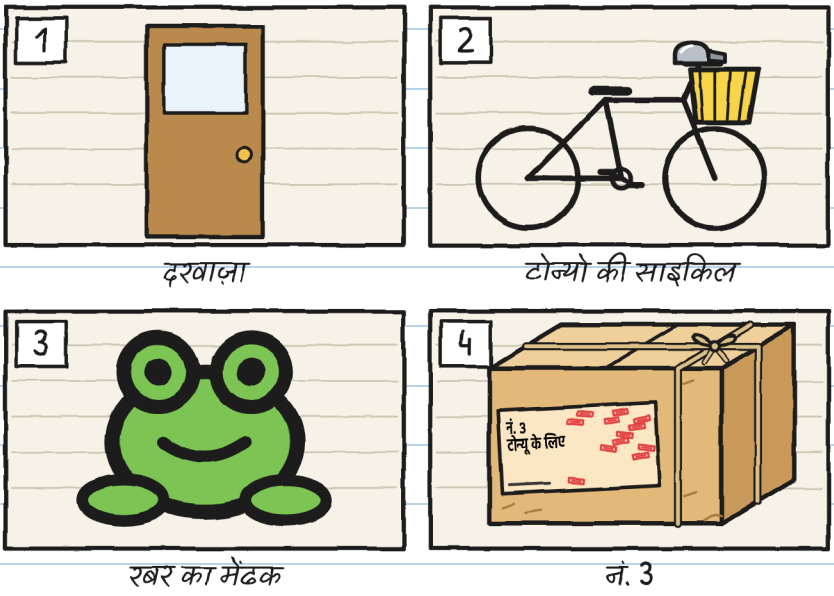
किसी ने उसे नहीं छुआ। टिन-टिन फिर बजा।

टिन-टिन।

"वह दरवाज़ा था!" जूलिता ने कहा।

जब मुझे कुछ समझ नहीं आता, मैं एक लिस्ट बनाता हूँ।

टिन-टिन के संदिग्ध



दरवाज़ा

टोन्यो की साइकिल

रबर का मेंढक

नं. 3

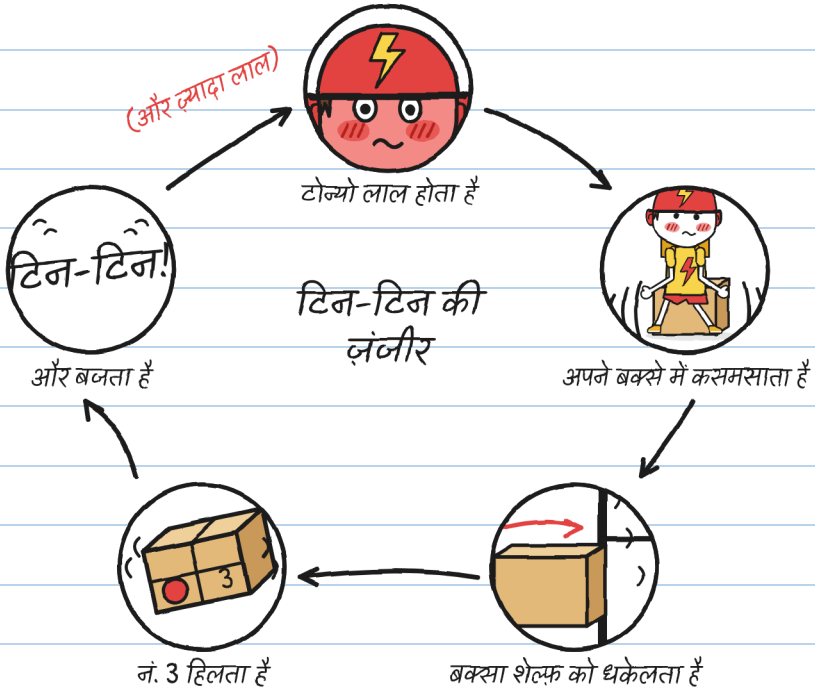
मेंढक बेक़सूर है। मैं उसे जानती हूँ। –ज.

मैं आवाज़ें आज़माने के लिए फ़ुटपाथ पर निकला। बारिश रुक चुकी थी।
मैंने दरवाज़ा खोला और बंद किया: चर्रर्र। टोन्यो की साइकिल की बेल बजाई: ट्रिंग! मैंने मेंढक दबाया: पीं।



अंदर जूलिता उँगली हिलाकर मना कर रही थी। कोई भी आवाज़ वैसी नहीं थी।
मैं अंदर गया। टोन्यो अपने बक्से में बैठा-बैठा कसमसाया।
टिन-टिन।

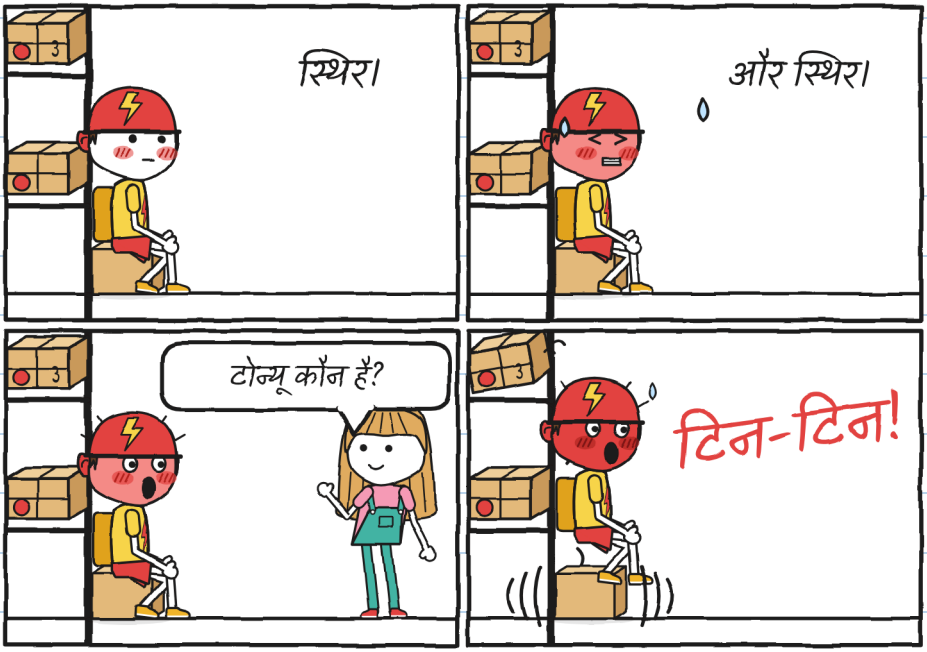
मैं झुका। टोन्यो का बक्सा शेल्फ़ के पाये से टिका हुआ था।



जादू नहीं था। टोन्यो था।
पार्सल हिलाने पर नं. 3 के अंदर कुछ बजता है।

मेरी तरह। –ज.

टोन्यो ने बिना हिले-डुले बैठे रहने का फ़ैसला किया। वह इतनी देर चला:

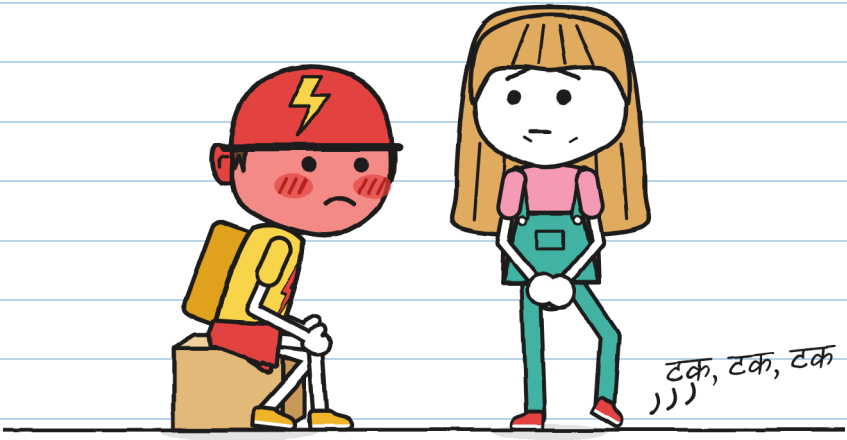


यह तो बस एक सवाल था। सवाल शेल्फ़ को धक्का नहीं देते। –ज.

यह वाला देता है।

"वह मैं था," टोन्यो ने अपने जूतों को देखते हुए कहा। "जब मैं छोटा था।"
उसने इतनी धीरे से कहा कि मुझसे ज़्यादा मेंढक ने सुना।

जूलिता ने मुँह खोला। वह बहुत से सवाल पूछना चाहती थी। उसने टोन्यो को देखा, जो अब भी अपने जूतों को देख रहा था। और मुँह बंद कर लिया।



"मैं और नहीं पूछ रही," जूलिता ने कहा।
उसे मुश्किल हुई। उसके पैर से साफ़ दिखा।

सवाल जो मैंने नहीं पूछे: नौ। मैंने उन्हें लिख रखा है। –ज.

"और आप इसे उसके पास आज तक क्यों नहीं ले गईं?" मैंने मारा से पूछा।
"मैं इसे बारह बार ले गई हूँ। लेबल देखो: न सड़क, न मकान नंबर, न सरनेम। जितने टोन्यू मिले, सबके यहाँ कोशिश की।"

मारा के टोन्यू



1. एक कैनरी।
(लेबल पर पैर रख दिया। नहीं चलेगा।)

2. दादा अंतोनियो, 71 साल।
("काश मैं होता।")

3. नहर की एक नाव।
(उसके हाथ नहीं हैं।)

"और टोन्यो?" जूलिता ने पूछा।
"पिछली बार जब मैंने इसे पहुँचाने की कोशिश की थी, तब मैं टोन्यो को जानती नहीं थी," मारा ने कहा और उसकी तरफ़ देखा। "और किसी ने मुझे बताया नहीं कि बचपन में उसे क्या कहते थे।"

मारा ने काउंटर के नीचे से एक बैंगनी कपड़ा निकाला। उन्होंने नं. 3 को ऐसे ढक दिया जैसे सोने के समय तोते का पिंजरा ढकते हैं। फिर उन्होंने टोन्यो का बक्सा शेल्फ़ से दो बित्ते दूर खिसका दिया।

"ऐसे। अब तुम जितना चाहो हिल सकते हो।"



टोन्यो जा सकता था। उसकी साइकिल दरवाज़े पर थी। दस मिनट में वह मोहल्ले के दूसरे छोर पर हो सकता था।

वह फिर बैठ गया।

पता नहीं क्यों। फिर भी लिख रहा हूँ। उसके बक्से में बैंकरेस्ट नहीं है, इसलिए मैंने उसके लिए एक बना दिया है।

तुमसे किसी ने बैंकरेस्ट नहीं माँगा था। –ज.

दुकान बंद करते समय टोन्यो सबसे आख़िर में रुका और अपने हेलमेट का पट्टा कसने लगा।
"मारा। कल मैं इस बारे में बात करने आऊँगा। पर अकेले में।"
"ये दोनों दुकान के हैं।"
टोन्यो ने हमारी तरफ़ देखा।
"ये दोनों ठीक हैं। पर 'बिजली' का कोई नहीं।"



टिन-टिन को मालिक मिल गया था: टोन्यो। अब यह जानना बाक़ी था कि वह पार्सल चाहता है या नहीं।

उसकी मदद कैसे करनी है, यह मुझे पहले से पता है। –ज.

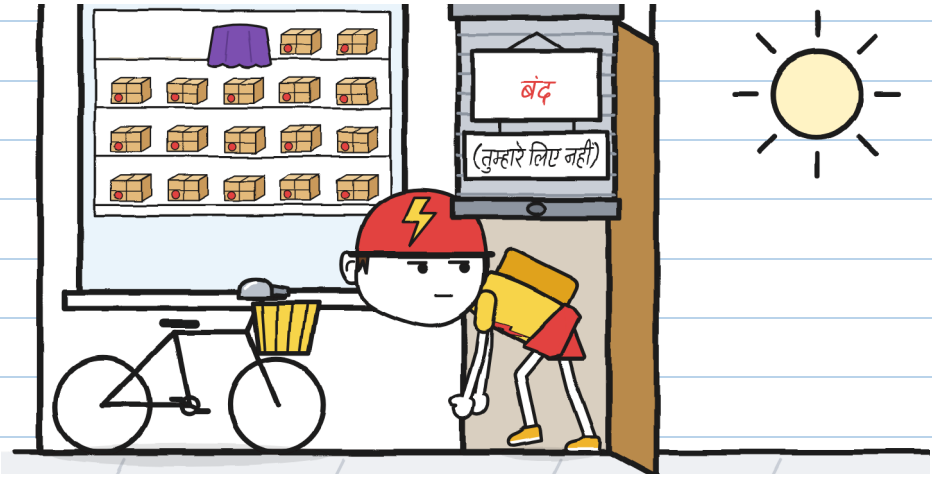
मुझे इसी बात की चिंता है।

अध्याय 2

मैंने हाँ नहीं कहा

रविवार को दुकान नहीं खुलती। मारा ने शटर आधा ऊपर छोड़ा और एक तख़्ती लगा दी: बंद (तुम्हारे लिए नहीं)।

टोन्यो ग्यारह बजे आया। अंदर आने से पहले उसने सड़क के एक तरफ़ देखा, फिर दूसरी तरफ़, जैसे सड़क पार करने से पहले देखते हैं। "बिजली" का कोई नहीं आ रहा था।



हम साढ़े दस बजे पहुँच गए थे। कहीं ज़रूरत पड़ जाए तो। –ज.

मारा ने नं. 3 काउंटर पर रखा। उन्होंने कपड़ा हटाया। वे ऐसे बोलीं जैसे कोई तख़्ती पढ़ रही हों:
"पार्सल नंबर तीन। टोन्यू के लिए। क्या वह तुम हो?"
"था।"
"मेरे लिए इतना काफ़ी है। क्या तुम इसे लेना चाहते हो?"

टोन्यो ने डिब्बे की तरफ़ देखा। डिब्बे ने कुछ नहीं कहा।
"मैंने हाँ नहीं कहा।"
"ना भी तो नहीं कहा।"
"मैंने यह कहा कि मैंने हाँ नहीं कहा।"



दस्तख़त न करने के लिए तीन वाक्य। मैंने गिने हैं। –ज.

टोन्यो ने डिब्बा ऐसे पकड़ा जैसे कोई जलता हुआ पतीला पकड़ता है। उसने उसे तौला। घुमाया। कान के पास ले जाकर ज़रा-सा हिलाया।

टिन-टिन।

उसने उसे झट से छोड़ दिया।

"अगर वह इसे घर ले जाए तो?" जूलिता ने कहा। "अगर पार्सल टोन्यो के घर में रात बिता ले, तो वह पहुँचाया हुआ माना जाएगा। यह तो तर्क की बात है।"

"वापसी की मुहर तर्क से नहीं चलती," मारा ने कहा। "वह स्याही से चलती है।"

क्या यह डिलीवरी मानी जाएगी?		
	उसे देखना	नहीं
	उसे पकड़ना	नहीं
	उसे घर ले जाना	नहीं
	लेबल पर कभी न मिटने वाली स्याही से दस्तख़त करना	हाँ

मुहर और मैं एक तरह से नहीं सोचते। –ज.

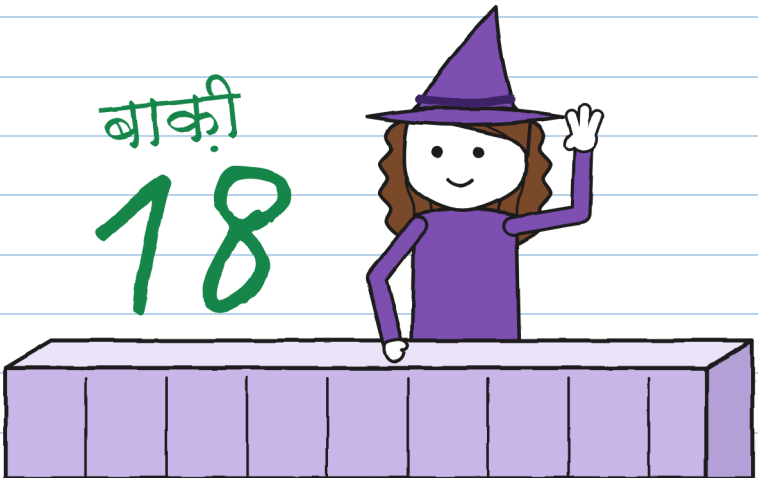
"जूलिता, गुनी: यह डिलीवरी तुम्हारी है," मारा ने कहा। "गरज वाली डिलीवरी की तरह। तीन शर्तों के साथ।"

उन्होंने उन्हें उँगलियों पर गिनाया:

1. *तुम दोनों डिब्बा नहीं खोलोगे। लेबल चिपका रहेगा।*
2. *नं. 3 दुकान से तभी बाहर जाएगा जब टोन्यो कहेगा।*
3. *पाने वाला चाहे तो दस्तख़त करे। बिना दस्तख़त के, पार्सल सुबह होते ही लौट आता है। यहाँ कुछ हुआ ही नहीं।*

"और अगर वह कभी न माँगे?" जूलिता ने पूछा।

"तो कभी नहीं।"



"कभी नहीं" डिलीवरी की तारीख़ नहीं होती। –ज.

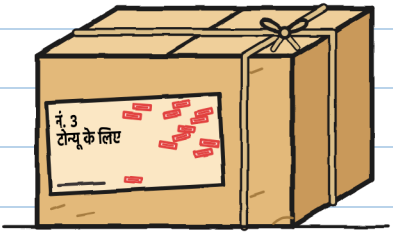
टोन्यो बहुत देर चुप रहा। जूलिता ने समय नापा: चार मिनट। "बिजली" के हिसाब से लगभग आधी डिलीवरी।

"मैं इसे ले जाता हूँ," आख़िरकार टोन्यो ने कहा। "बंद ही। सोचने के लिए। फ़िलहाल।"
"माँग तुम रहे हो?" मारा ने पूछा।
"माँग मैं रहा हूँ।"

मैंने लिख लिया कि नं. 3 कैसे गया। ताकि कोई कुछ और न कह सके:

रवानगी की पर्ची

- [x] डिब्बा: बंद
- [x] लेबल: चिपका हुआ
- [x] माँगने वाला: टोन्यो
- [ ] दस्तख़त: अभी नहीं



बाहर टोन्यो ने नं. 3 अपनी साइकिल की टोकरी में रख दिया। छोड़ते ही वह बजा: टिन-टिन।

वह हैंडल की तरफ़ देखता रह गया, जहाँ "बिजली" की बेल लगी है। जैसे उसे कुछ याद आ गया हो।
"क्या?" जूलिता ने पूछा।
"कुछ नहीं।"
टोन्यो साइकिल को हाथ से पकड़े पैदल चला गया। वह कभी पैदल नहीं चलता।



वह "कुछ नहीं" असल में "कुछ" था। उसकी मदद करनी पड़ेगी। –ज.

दरवाज़े से मैंने नुक्कड़ पर "बिजली" की दो साइकिलें खड़ी देखीं।
"टोन्यो! टोकरी में क्या ले जा रहे हो?" कमर तक लंबी चोटी वाली एक लड़की ने चिल्लाकर पूछा।
"एक डिलीवरी।"
"किसके लिए?"
"एक ग्राहक के लिए।"

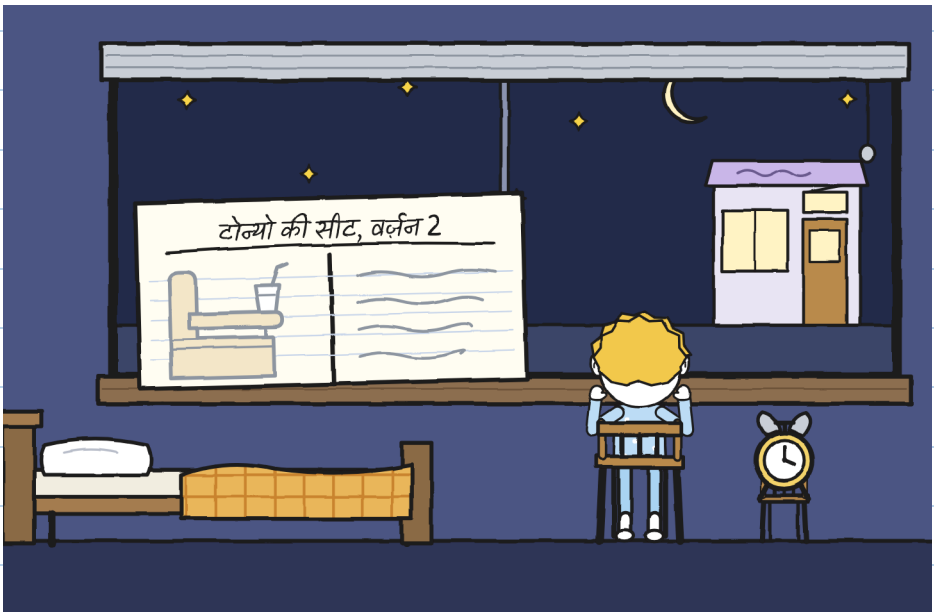
उसने झूठ नहीं बोला। जवाब देने से पहले उसने डिब्बा घुमा दिया: लेबल उसकी तरफ़। "बिजली" वाले उसे पढ़ नहीं सकते थे।



अब समझ आया कि "बिजली का कोई नहीं" का क्या मतलब था। –ज.

उस रात मैंने अपने कमरे की खिड़की का परदा ऊपर ही छोड़ दिया। मेरा घर दुकान के ठीक सामने है: अगर नं. 3 लौटा, तो मैं उसे देख लूँगा।

"गुनी?" मम्मी ने गलियारे से कहा। "जाग क्यों रहे हो?"
"एक पार्सल की निगरानी कर रहा हूँ।"
"अच्छा। ठीक है। पर निगरानी पजामा पहनकर करना।"



मैं भी निगरानी करना चाहती थी। मेरी खिड़की आँगन की तरफ़ खुलती है। –ज.

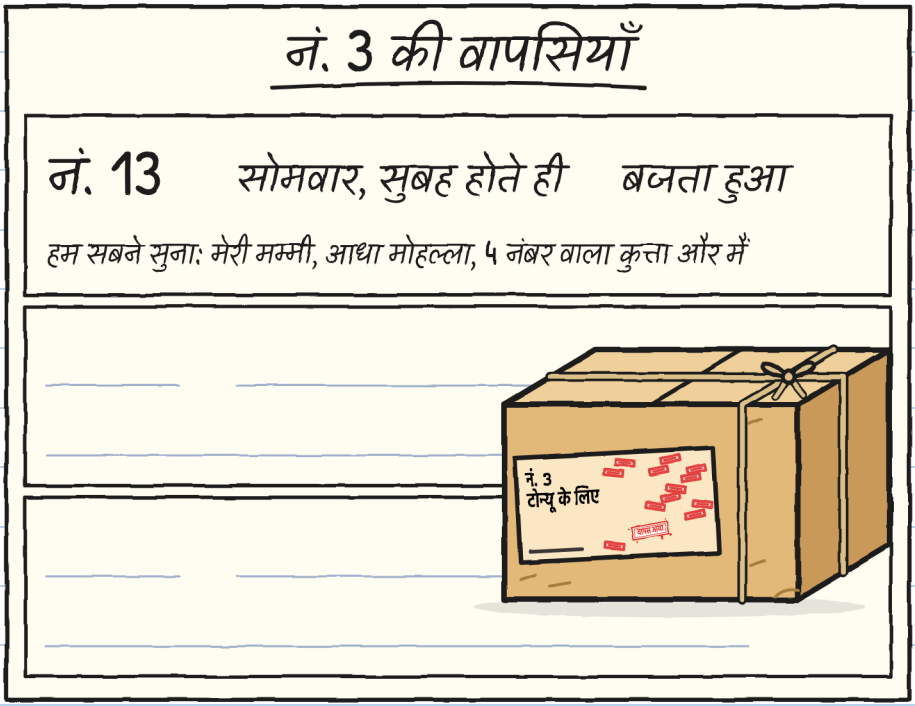
सुबह होते ही नं. 3 दिखने से पहले सुनाई दिया।

टिन-टिन, टिन-टिन, टिन-टिन।

वह छतों के ऊपर से बिना जल्दी के आ रहा था, आइसक्रीम वाली गाड़ी की तरह बजता हुआ। तीन खिड़कियों में बत्ती जली। एक कुत्ता भौंका। नं. 3 दरवाज़े के ऊपर वाली छोटी खिड़की से अंदर आ गया, वही जिसे मारा इसी काम के लिए खुला छोड़ती हैं।



स्कूल के बाद हम दुकान गए। नं. 3 अपने शेल्फ़ पर था। उस पर एक मुहर और लगी थी: तेरह।



"यह सज़ा नहीं है," मारा ने कहा। "यह नियम है। किसी ने दस्तख़त नहीं किए, इसलिए वह लौट आता है।"

तेरह मुहरें। इस रफ़्तार से तो डिब्बा दिखेगा ही नहीं। —ज.

टोन्यो पाँच बजकर बीस मिनट पर आया, अपनी डिलीवरी के बाद। उसने नं. 3 की वापसी के बारे में नहीं पूछा। उस सुबह उसने उसे अपने घर के ऊपर से गुज़रते सुना था।

यह मैंने नहीं देखा। उसने ख़ुद मुझे बताया:

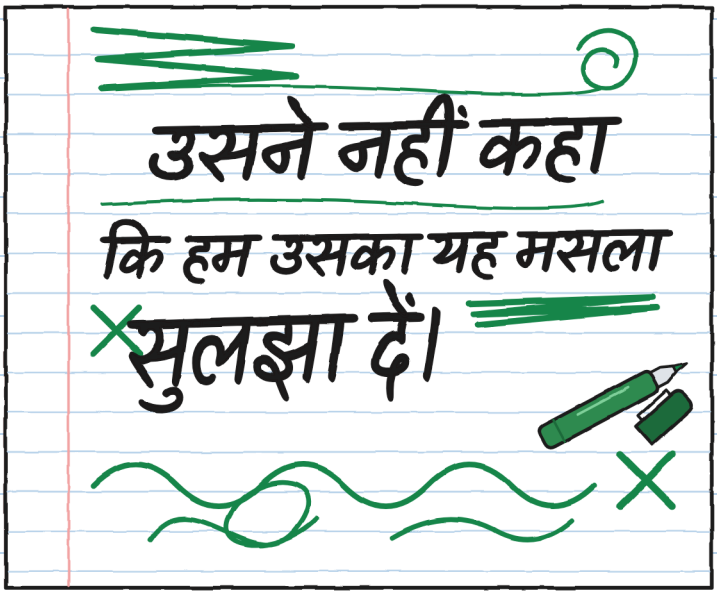
टोन्यो ने मुझे क्या बताया



"मैंने उसे पायदान पर छोड़ दिया था। सारी रात।"
"तुमने उसे घर के अंदर क्यों नहीं रखा?" जूलिता ने पूछा।
"घर में मुझे ऐसे बुलाने वाले पहले से काफ़ी हैं।"

"एक दस्तख़त से सब ठीक हो जाता," टोन्यो के जाने के बाद जूलिता ने कहा। "बस एक। दो सेकंड लगते हैं। मैंने अपने दस्तख़त से नापा है।"

मैंने डायरी खोली। "हरा रंग मेरा वाक्य नहीं ढकेगा," मैंने सोचा। मैंने बॉलपेन से दबाकर लिखा:



मैंने पढ़ लिया। मैं सहमत नहीं हूँ। फ़िलहाल। –ज.

मेरे पास एक और आइडिया है। मुझे ऐसे मत देखो। –ज.

अध्याय 3

ऑटोग्राफ़

मंगलवार को, स्कूल से निकलकर, दुकान के सामने फ़ुटपाथ पर एक मेज़ लगी थी। उस पर पीला मेज़पोश था जो ज़मीन तक लटक रहा था और जूलिता की लिखावट वाला एक पोस्टर था। बीच में मेज़पोश से ढकी हुई एक उभरी हुई चीज़ थी।



"यह स्टैंड है: आराम से दस्तख़त करने का सहारा," जूलिता ने कहा। "मैं ऑटोग्राफ़ इकट्ठा करती हूँ।"
"तुम ऑटोग्राफ़ कब से इकट्ठा करने लगीं?"
"कल से।"

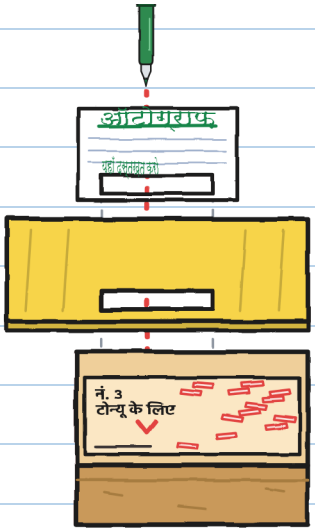
स्टैंड के ऊपर लाइनों वाली एक शीट रखी थी। नीचे कैंची से काटी हुई एक छोटी खिड़की थी। मेज़पोश में ठीक उसके नीचे वैसी ही एक और थी।

मैंने मेज़पोश का एक कोना उठाया। स्टैंड नं. 3 ही था, लिटाया हुआ। छोटी खिड़कियों से उसका लेबल ऊपर की तरफ़ दिख रहा था।

यह कैसे चलता है

1. शीट, अपनी छोटी खिड़की वाली।

2. मेज़पोश, अपने छेद वाला।



3. नं. 3 का लेबल, उसका ख़ाली हिस्सा।

4. जो खिड़की में दस्तख़त करता है... वह लेबल पर दस्तख़त कर देता है।

"मेरे मार्कर से," जूलिता ने ख़ुश होकर फुसफुसाया। "कभी न मिटने वाली स्याही। कल नं. 3 नहीं लौटेगा। टोन्यो को तब पता चलेगा जब हम उसे पार्सल दिखाएँगे। सरप्राइज़!"

"टोन्यो ने यह नहीं कहा कि नं. 3 दुकान से बाहर जाए," मैंने कहा। "शर्त दो।"

"उसे अच्छा लगेगा।"

"और मारा?"

"वे फ़ोन पर थीं। मैंने कह दिया कि यह ऑटोग्राफ़ की मेज़ है। और है भी।"

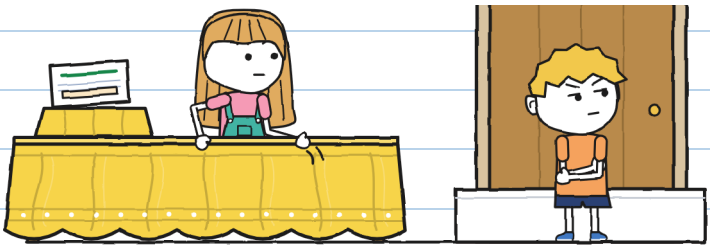
"और स्टैंड?"

"इसके बारे में उन्होंने पूछा नहीं।"

मैंने उसे फ़्लोरा और आठवें बीज की याद दिलाई: जूलिता ने फ़्लोरा को समय से पहले दस्तख़त नहीं करने दिए थे।

"वह और बात थी। वह डिलीवरी अधूरी थी। यह तो शॉर्टकट है: छोटा रास्ता।"

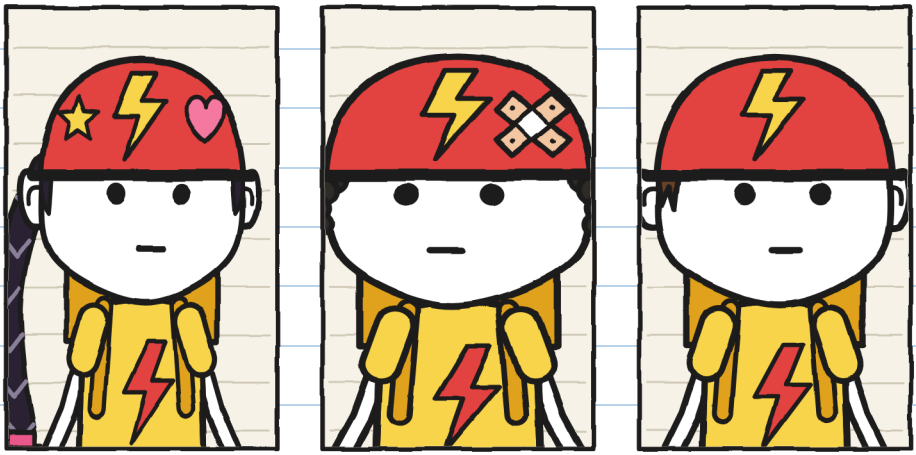
"तो तुम कर लो। मैं नहीं करता।"



वह सीढ़ी पर बैठ गया। बड़ी शान से। किसी काम नहीं आया। –ज.

"बिजली" हमारी सड़क से पाँच बजकर दस मिनट पर गुज़रती है। तीन लोग, एक के पीछे एक।

"बिजली" के कार्ड



ज़ोई, "रॉकेट":
सबसे तेज़।
निकनेम वही रखती है।

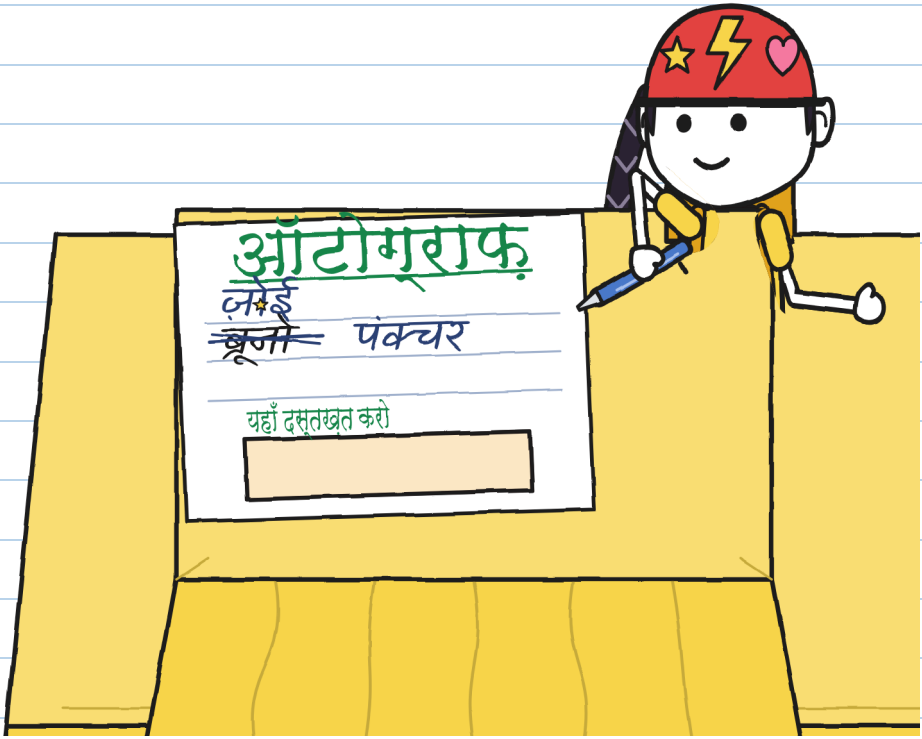
ब्रूनो, "पंक्चर":
एक बार पंक्चर हुआ था।
दो साल पहले।

टोन्यो:
कोई निकनेम नहीं।
अभी तक।

"ऑटोग्राफ़? हमारे?" ज़ोई ने कहा। उसने ब्रेक लगाया और साइकिल से उतर गई।

किसी ने उनसे आज तक ऑटोग्राफ़ नहीं माँगा। इसीलिए यह काम करता है। —ज.

ज़ोई ने सबसे पहले दस्तख़त किए, "ओ" में एक तारा बनाकर। ब्रूनो ने "ब्रूनो" लिखा। ज़ोई ने उसे काटकर "पंक्चर" लिख दिया। "'बिजली' में निकनेम कभी हटाए नहीं जाते," ब्रूनो ने बिना गुस्सा हुए मुझे समझाया। "मैं एक बार पंक्चर हुआ था।"

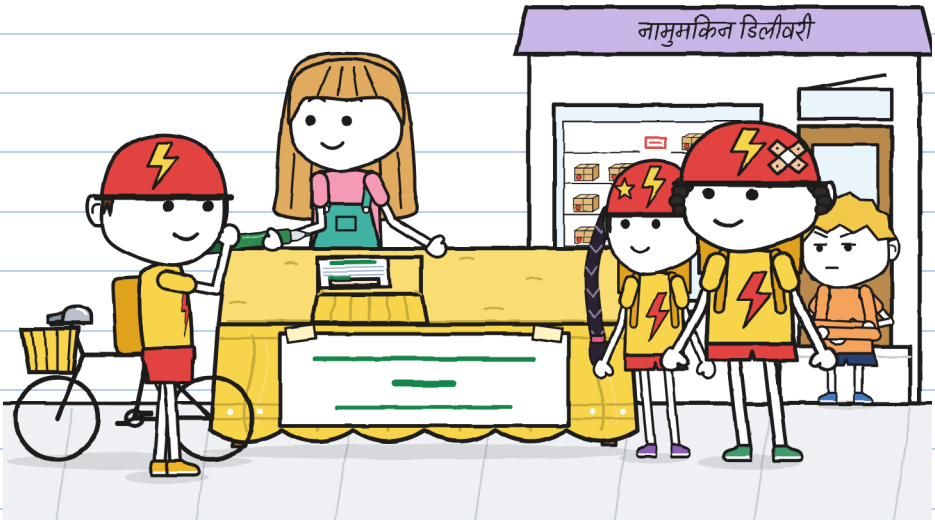


टोन्यो अब भी साइकिल पर था। वह मेज़ को उसी तरह देख रहा था जैसे रविवार को उसने नं. 3 को देखा था।

“अब तुम्हारी बारी, टोन्यो,” जूलिता ने कहा। “यहाँ नीचे, इस चौखट में। यह सम्मान की जगह है।”

और उसने उसे अपना हरा मार्कर पकड़ा दिया।

टोन्यो से ऑटोग्राफ़ माँगे जाने का यह पहला मौक़ा था। वह साइकिल से उतरा और सीधा खड़ा हो गया।

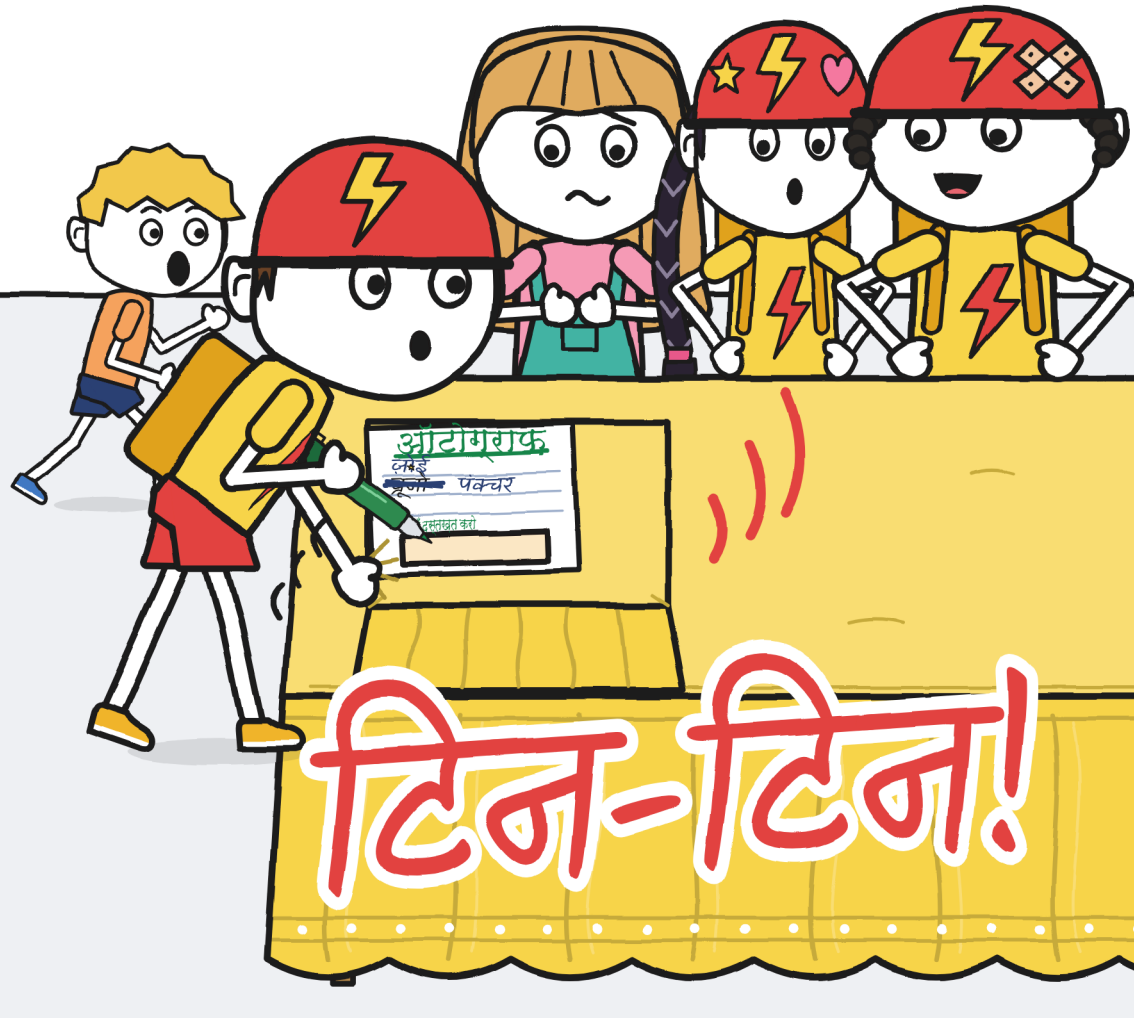


मैं सीढ़ी से सब देख रहा था। “मेरा इससे क्या लेना-देना,” मैं सोच रहा था। और चुप रहा।

मैं उठ खड़ा हुआ।

“टोन्यो, रु...”

मैंने देर कर दी। टोन्यो ने दस्तख़त करने के लिए स्टैंड झटके से अपनी ओर खींचा। मेरे चेतावनी देने से पहले, मेज़पोश के नीचे कुछ बज उठा:



टोन्यो ने मेज़पोश उठाया।

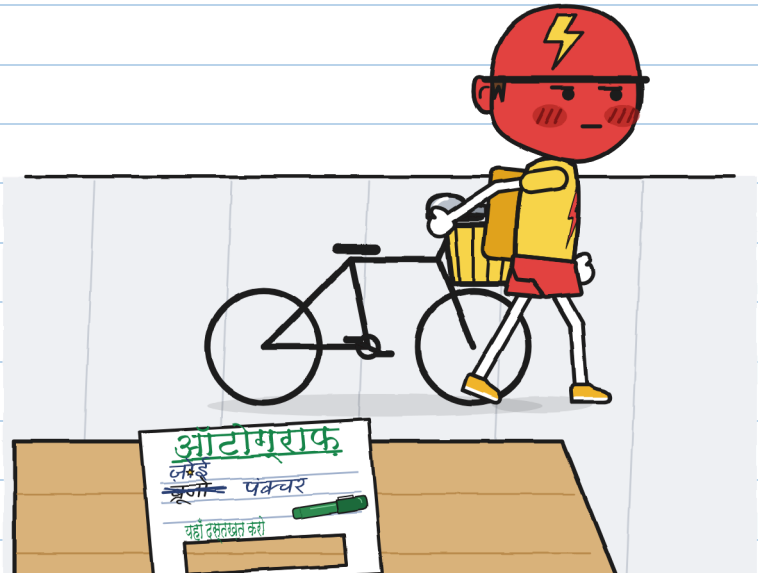


"टो-न्यू के लिए," ज़ोई ने धीरे-धीरे पढ़ा, जैसे कोई इनाम पढ़ता है।
"टोन्यू?" ब्रूनो ने कहा और हँस पड़ा।
ज़ोई नहीं हँसी। ज़ोई सोच रही थी।

टोन्यो चिल्लाया नहीं। उसने मार्कर की टोपी धीरे से लगाई और उसे शीट पर रख दिया। बिना दस्तख़त किए।

"'बिजली' किसी जाल पर दस्तख़त नहीं करती।"

उसने साइकिल हैंडल से पकड़ी और पैंदल चला गया। उसके पीछे कोई नहीं गया।



वह हेलमेट के रंग का था। पर यह शर्म वाला लाल नहीं था। यह गुस्से वाला लाल था।

लाल-मीटर में उसके लिए कोई नंबर नहीं है। –ज.

मारा बैंगनी कपड़ा लेकर बाहर आई। उन्होंने यह नहीं पूछा कि पार्सल किसने निकाला: उन्होंने शेल्फ़ की ख़ाली जगह देखी, मेज़ देखी और जूलिता को देखा।

उन्होंने नं. 3 को ढका और गोद में उठा लिया।

"यह पार्सल पहुँचाया नहीं गया है," उन्होंने ज़ोई और ब्रूनो से कहा। "और लेबल पर जो लिखा है, वह टोन्यो का मामला है।"



वे बेल बजाए बिना चले गए।

मैंने जूलिता को सामान समेटने में मदद की: मेज़पोश, पोस्टर, दो दस्तख़त और एक छेद वाली शीट। मैंने उससे "मैंने कहा था" नहीं कहा। "कोई बात नहीं" भी नहीं कहा, क्योंकि बात थी।
"तुमने तो कुछ किया ही नहीं," उसने कहा।
"मैंने ख़बर देर से दी। पहले दे सकता था। या मारा को फ़ोन कर सकता था।"



फिर जूलिता अंदर गई और बिना किसी की मदद के मारा को सब बता दिया: खिड़की, मेज़पोश, शेल्फ़, फ़ोन।
"टोन्यो को," मारा ने कहा, "तुम ख़ुद बताओगी।"

बुधवार को टोन्यो पाँच बजकर दस मिनट पर गुज़रा और रुका नहीं। पाँच बजकर बीस मिनट पर फिर गुज़रा। तीसरी बार, जूलिता फ़ुटपाथ के बीच में एक काग़ज़ लिए खड़ी थी।

माफ़ीनामा

मैंने तुम्हारा पार्सल बाहर निकाला।

मैंने तुम्हें चकमा देना चाहा।

मैंने तुम्हारा लेबल दूसरों को दिखा दिया।

माफ़ करना।

–जूलिता

टोन्यो ने काग़ज़ साइकिल से उतरे बिना पढ़ा।

"ठीक है। पढ़ लिया।"

"क्या तुम मुझे माफ़ करते हो?"

"मैंने कहा कि मैंने पढ़ लिया।"

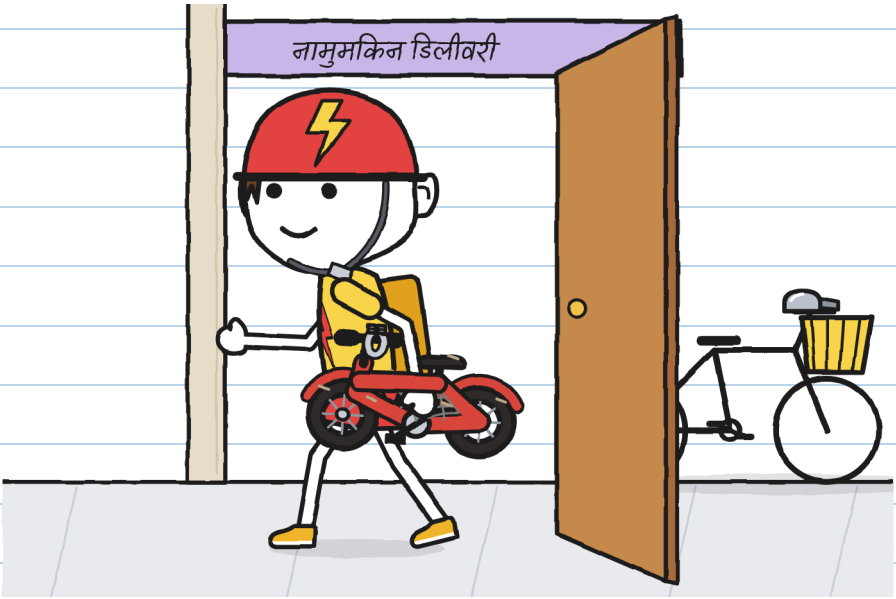
उस शाम टोन्यो दुकान नहीं आया। उसका बक्सा ख़ाली रहा।

मैंने पूरा नाम लिखकर दस्तख़त किए। इतना तो करना ही था। –ज.

अध्याय ५

एक छोटी साइकिल

गुरुवार को टोन्यो सड़क के दोनों तरफ़ देखे बिना दुकान में आया। उसकी बग़ल में एक साइकिल दबी हुई थी।



वह उसकी साइकिल नहीं थी। या थी: जब वह छोटा था तब की।
"रविवार से मेरे सिर में टिन-टिन बज रहा है," टोन्यो ने कहा।
"मुझे वह आवाज़ पहचानी-सी लगती है। मैं देखना चाहता हूँ कि मुझे ठीक से याद है या नहीं।"

"मैं पार्सल खोलना चाहता हूँ। यहाँ नहीं। ऐसी जगह जहाँ शोकेस न हो।"

मारा हमें दुकान के पीछे वाले कमरे में ले गई।

"देखने के लिए खोलना दस्तख़त करना नहीं है," उन्होंने कहा।

"बिना दस्तख़त के, सुबह होते ही वह लौट आता है।"



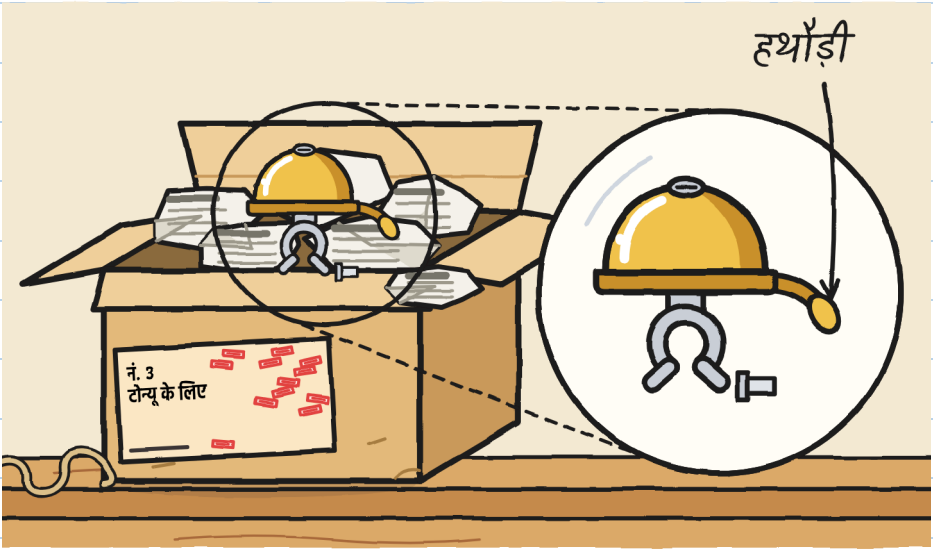
"क्या मैं रुक सकती हूँ?" जूलिता ने पूछा। उसने पूछा।

टोन्यो ने देर लगाई।

"अगर कुछ नहीं छुओगी।"

"न डिब्बा, न यह बात।"

टोन्यो ने डोरी खोली। अंदर अख़बार का काग़ज़ था, इतना पुराना कि अपने-आप फट रहा था। और काग़ज़ के बीच...

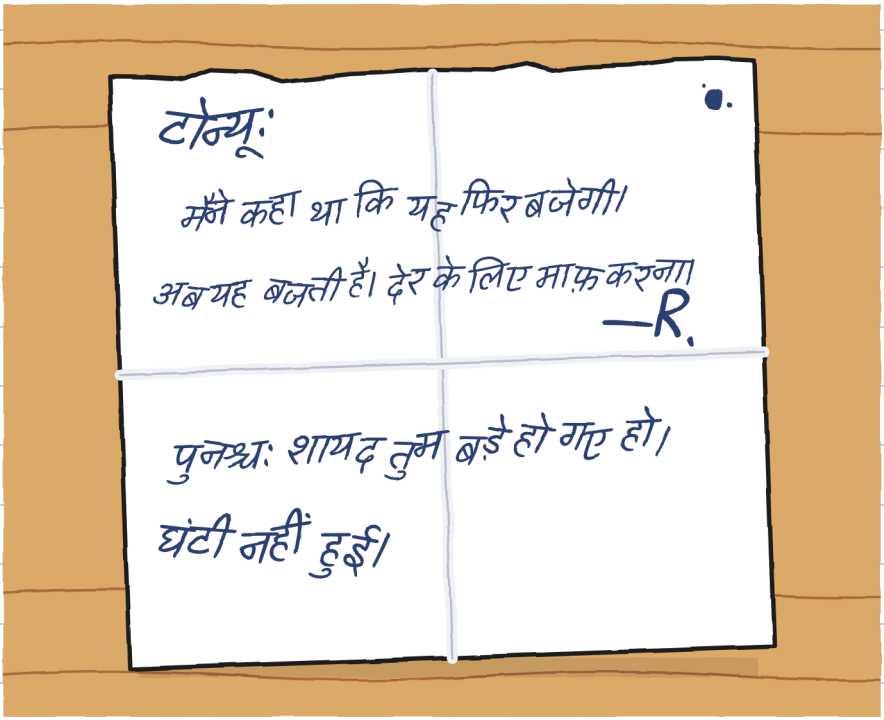


साइकिल की एक घंटी। छोटी, सुनहरी, एक स्प्रिंग से जुड़ी छोटी हथौड़ी वाली: ज़रा-सा हिलाओ तो बज उठती है।

नं. 1 काटता था। नं. 2 भागता था। नं. 3 बस बजता है।

न ड्रैगन, न पंजे। एक घंटी। मुझे पसंद है। –ज.

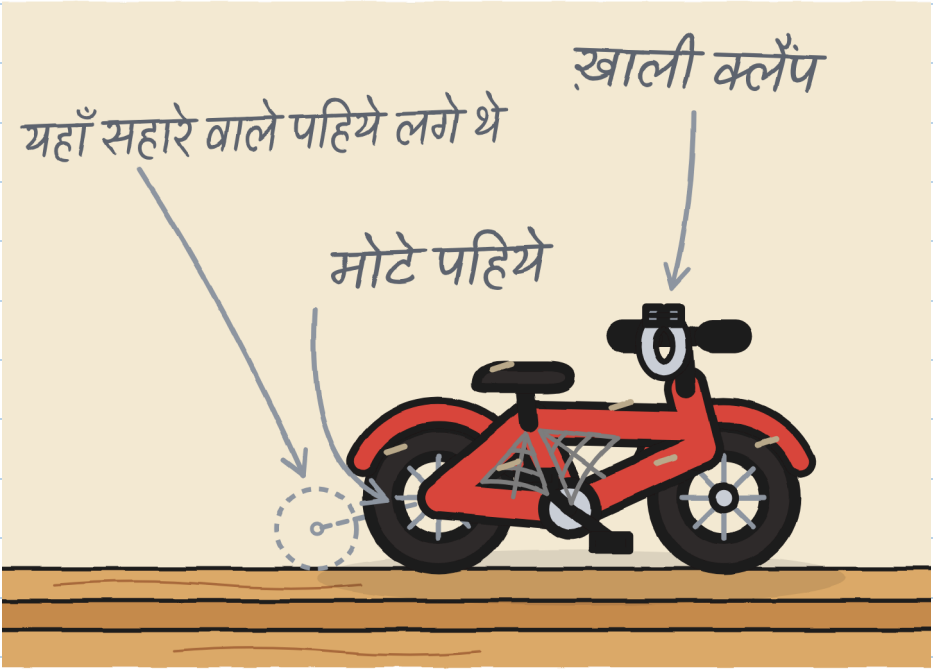
नीचे चार तह की हुई एक पर्ची थी।



टोन्यो ने उसे दो बार पढ़ा।
"कितनी बुरी लिखावट है," उसने कहा। और काफ़ी देर तक और कुछ नहीं कहा।

R. के वादे देर से पूरे होते हैं। फ्लोरा ने ऐसा कहा था। कितनी देर से, यह नहीं कहा। —ज.

तभी टोन्यो ने छोटी साइकिल मेज़ पर रख दी।



"यह मेरी थी। इस पर यही घंटी लगी थी, क्लैंप से कसी हुई। एक दिन घंटी बजना बंद हो गई: क्लैंक। किसी ने कहा: 'लाओ, टोन्यू, मैं इसे ठीक कर दूँ और तुम्हें लौटा दूँ।'"

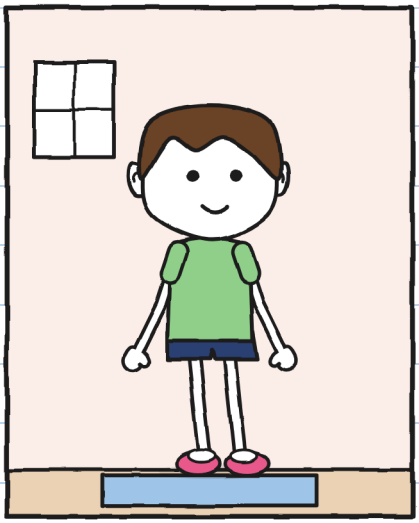
"कौन?" जूलिता के मुँह से निकल गया, और उसने अपना मुँह ढक लिया।

"चेहरा मुझे याद नहीं। घंटी याद है। और यह कि मैंने बहुत इंतज़ार किया।"

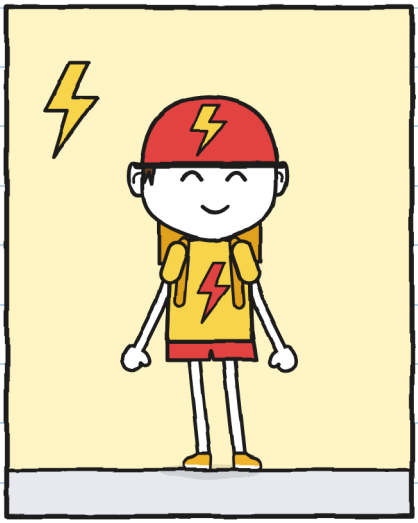
“घर में मुझे अब भी टोन्यू कहते हैं,” टोन्यो ने कहा। “‘बिजली’ में नहीं। ‘बिजली’ में मैं टोन्यो हूँ: पहले दिन कार्ड पर मैंने ख़ुद लिखा था।”

“और टोन्यू में बुराई क्या है?” मैंने पूछा।

“कुछ नहीं। जब तक ज़ोई न कहे। ‘बिजली’ में निकनेम कभी हटते नहीं। ब्रूनो को देखो।”



घर पर: टोन्यू



“बिजली” में: टोन्यो

“ब्रूनो ने मंगलवार से अब तक मुझे छह बार टोन्यू कहा है,” टोन्यो ने जोड़ा।

जूलिता अपने कोने में सिकुड़ गई।

"क्या तुम अब भी इसमें बैठ सकते हो?" जूलिता ने पूछा। वह रोक नहीं पाई।
मारा ने साइकिल ज़मीन पर उतार दी। टोन्यो बैठ गया।

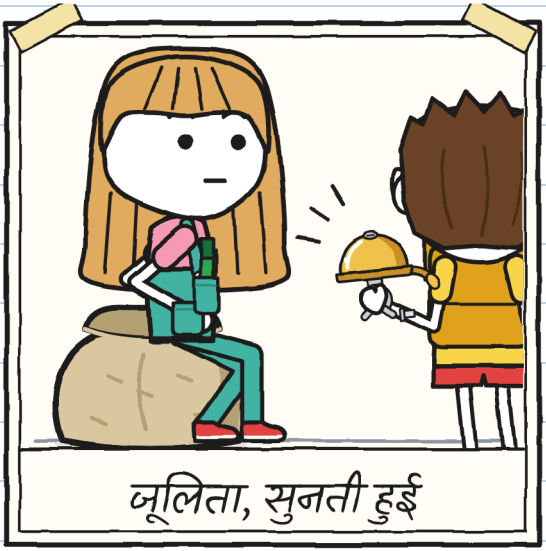


आ गया। थोड़ा-बहुत।
मारा ने एक आवाज़ निकाली। वह हँसी जैसी थी। टोन्यो भी हँस पड़ा। मैंने उसे शनिवार के बाद से हँसते नहीं देखा था।

लाल-मीटर: 0। लिख रही हूँ, क्योंकि यह भी गिना जाता है। –ज.

“तुम्हारी अब वाली साइकिल पर पहले से बेल है,” मैंने कहा।
“‘बिजली’ वाली। इस घंटी को लगाना ज़रूरी नहीं है। तुम इसे रख सकते हो। या इसे लौट जाने दे सकते हो।”
“मुझे पता है,” टोन्यो ने कहा। पर उसने मुझे देखा, जैसे यह बात पहली बार सुन रहा हो।

जूलिता ग्यारह मिनट चुप रही, सुनती रही, मार्कर एक तरफ़ रखकर।





ग्यारह मिनट। मेरी ज़बान सो गई। –ज.

"मैं इसे अकेले आज़माना चाहता हूँ," टोन्यो ने कहा।
मारा, जूलिता और मैं बाहर निकल आए। टोन्यो ने पीछे वाले कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया।

जूलिता दुकान के दूसरी तरफ़ चली गई, ताकि सुन न सके। मैंने, सुनने से बचने के लिए, चित्र बनाया: टोन्यो की सीट पर अब छतरी है, कपड़े की एक छत। फिर भी सब सुनाई दिया।



टिन-टिन।
यह वही टिन-टिन था जो शनिवार को सुना था। फिर एक और। और फिर बहुत देर तक कोई नहीं।

जब टोन्यो बाहर निकला, तो एक हाथ में घंटी थी और बग़ल में डिब्बा।

"मैं इसे कल तक ले जा रहा हूँ। बिना दस्तख़त किए।"

"तो सुबह होते ही यह लौट आएगा," माशा ने कहा।

"लौट आए। मैं जानना चाहता हूँ कि इसे एक रात अपने पास रखना कैसा लगता है।"

"और अगर टोन्यो घंटी को डिब्बे से बाहर छोड़ दे?" मैंने पूछा।

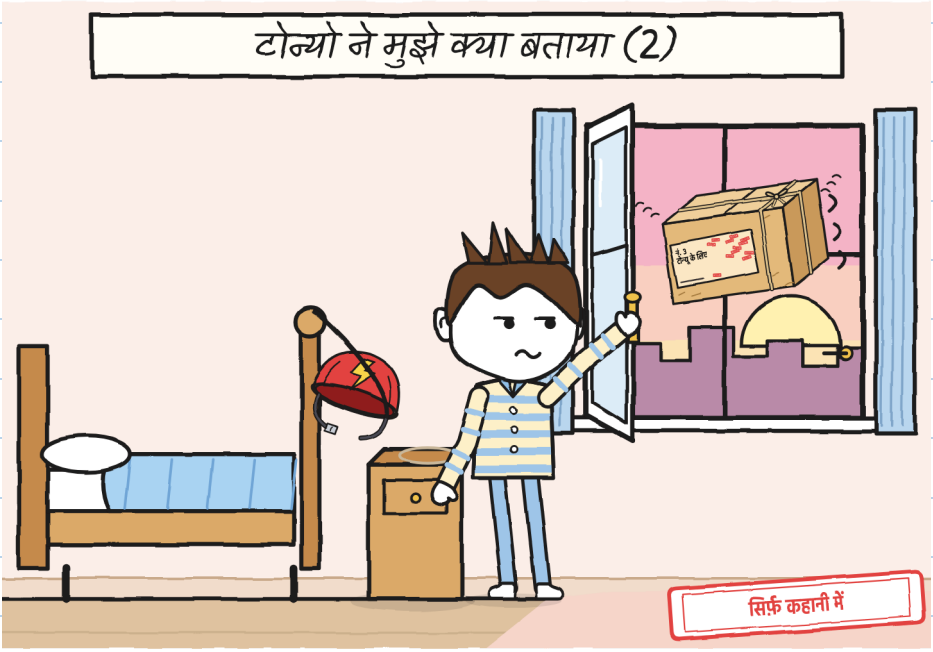
"मैंने कभी आज़माया नहीं," माशा ने कहा। "और सुबह सात बजे आज़माने का मेरा इरादा नहीं है।"

टोन्यो ने घंटी और पर्ची डिब्बे के अंदर रख लीं।



कल तक चौदह घंटे बाक़ी हैं। मैं उन्हें गिनूँगी। –ज.

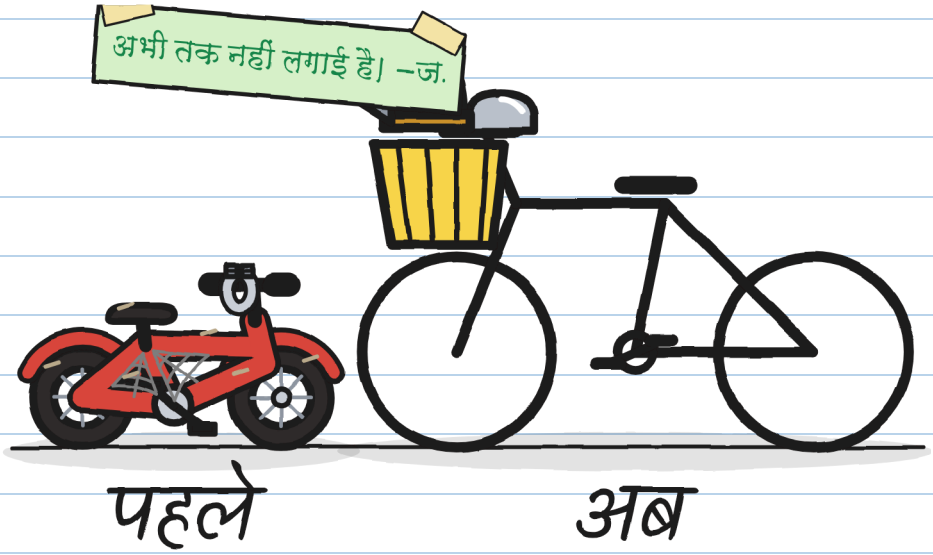
शुक्रवार को मेरी सड़क फिर बज उठी: टिन-टिन, टिन-टिन, टिन-टिन। नं. 14 की वापसी।
पिछली रात का मैंने नहीं देखा। टोन्यो ने बताया:



"इस बार नं. 3 पायदान पर नहीं सोया। वह मेरे सिरहाने की मेज़ पर सोया। सुबह होते ही वह शीशे पर टकराने लगा, तो मैंने खिड़की खोल दी।"

उसने एक पार्सल के लिए खिड़की खोल दी। कितना शिष्ट। –ज.

मैंने टोन्यो की दोनों साइकिलें साथ-साथ बनाईं। अब वाली साइकिल में मैंने घंटी जोड़ दी। बहुत अच्छी लगती है। जूलिता ने बनी हुई घंटी पर एक पर्ची चिपका दी।



वह सही थी। मुझे थोड़ा बुरा लगता है।

अध्याय 5

अकेले में

शुक्रवार की शाम नं. 3 अपने शेल्फ़ पर था, चौदह मुहरों के साथ।
टोन्यो अपने बक्से में बैठा उसे दूर से देख रहा था।

जूलिता दो दिन से कुछ तैयार कर रही थी। मुझे फिर किसी झमेले का डर लगा।
वह दो विकल्पों वाली एक शीट थी।



टोन्यो ने शीट पढ़ी। फिर मारा की तरफ़ देखा।

"अगर मैं दस्तख़त करूँ, तो किसे पता चलेगा?"

"मुझे। और मेरी रजिस्टर वाली किताब को, जिसमें डिलीवरी दर्ज होती हैं। वह इस दराज़ से बाहर नहीं जाती।"

"और 'बिजली' को?"

"मैं 'बिजली' को नहीं बताऊँगी। रजिस्टर कोई पोस्टर नहीं होता।"



पोस्टर पर नंबर होते हैं। नाम दराज़ में रहते हैं। –ज.

टोन्यो अपने बक्से से उठा।

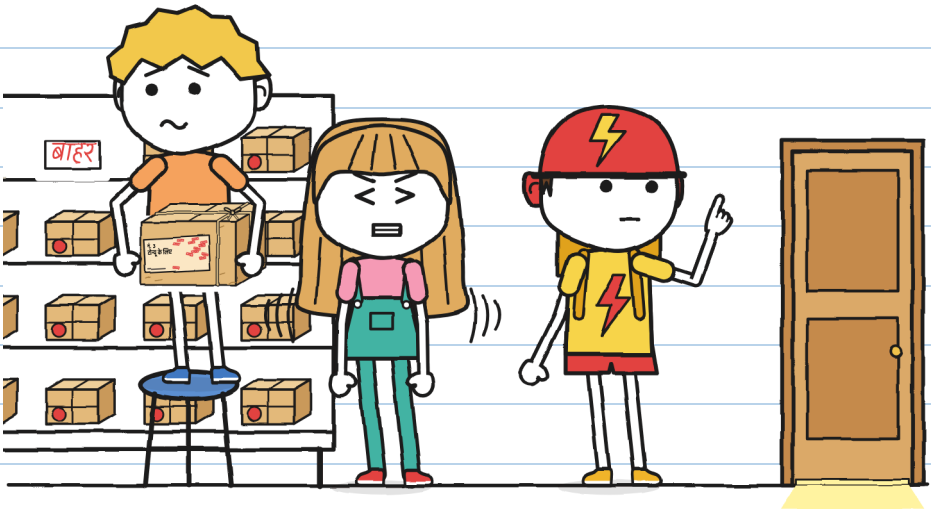
"B वाला।"

जूलिता उछली नहीं। मैंने उसे न उछलते देखा।

"पीछे वाले कमरे में," टोन्यो ने आगे कहा। "और मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों वहाँ रहो।"

"मैं भी?" जूलिता ने पूछा।

"तुम सबसे ज़्यादा चाहती हो कि मैं दस्तख़त करूँ। तुम्हें अपने सामने रखना बेहतर है।"



पीछे वाले कमरे में टोन्यो ने घंटी और पर्ची फिर निकाली। उसने उन्हें धीरे-धीरे, बड़ी सावधानी से देखा।

"दस्तख़त करने से पहले मैं देखता हूँ कि क्या दस्तख़त कर रहा हूँ," उसने किसी की तरफ़ देखे बिना कहा।

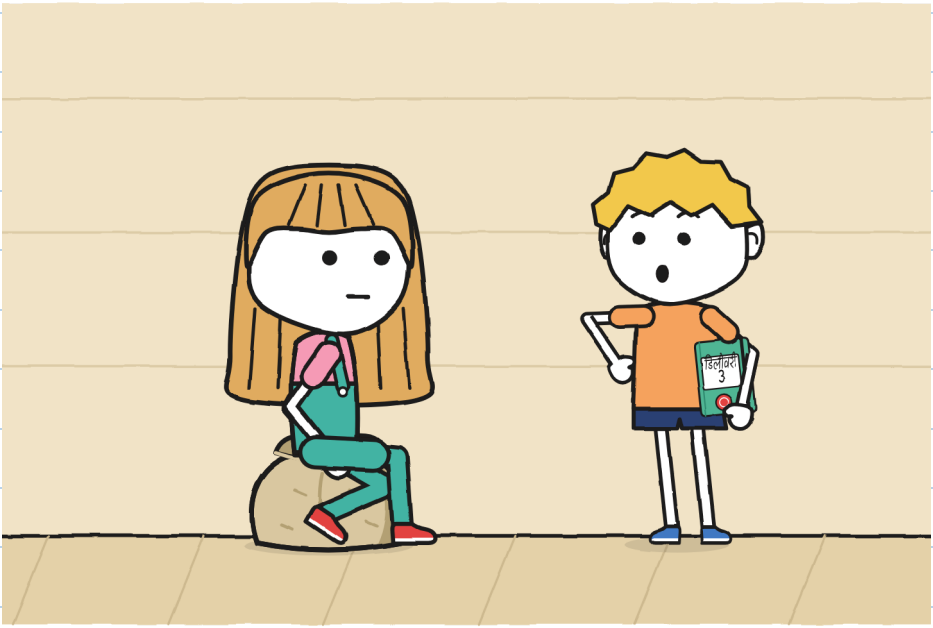
जूलिता अपनी टी-शर्ट के रंग की हो गई।



जूलिता ने टोन्यो को अपना हरा मार्कर दे दिया। वह कोने में एक बोरे पर बैठ गई।

"क्या कर रही हो?" मैंने पूछा।

"अपने हाथों पर बैठी हूँ। ताकि मदद न कर सकूँ।"



मैंने डायरी बंद की और बग़ल में दबा ली।

फिर उसने सब लिख लिया। –ज.

टोन्यो ने मार्कर की टोपी खोली और दस्तख़त कर दिए।



लेबल पर "टोन्यू" लिखा था। दस्तख़त में "टोन्यो"।
"ऐसे चलेगा?" उसने मारा से पूछा। "नाम तो वही नहीं है।"
"दस्तख़त वही करता है जो पाता है," मारा ने कहा। "और पाया तुमने है।"

मारा ने डिलीवरी अपनी किताब में दर्ज की। जूलिता के हाथ में पहले से नीला स्टूल था। उसने उसे ज़मीन पर रख दिया।

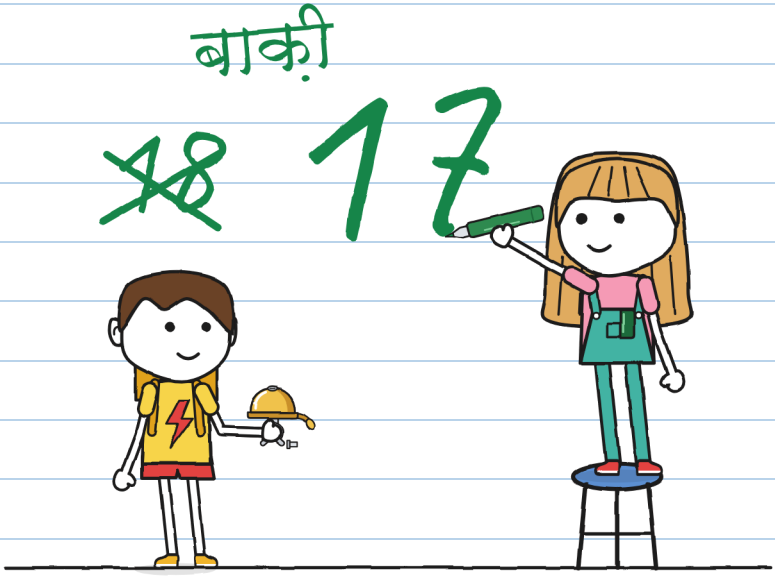
"क्या मैं पोस्टर बदल सकती हूँ?" उसने पूछा। उसने टोन्यो से पूछा, मारा से नहीं।

टोन्यो ने पोस्टर देखा।

"इस पर तो बस एक नंबर लिखा है।"

"बस।"

"ठीक है।"



मैंने पहले पूछ लिया था। रिकॉर्ड में रहे। –ज.

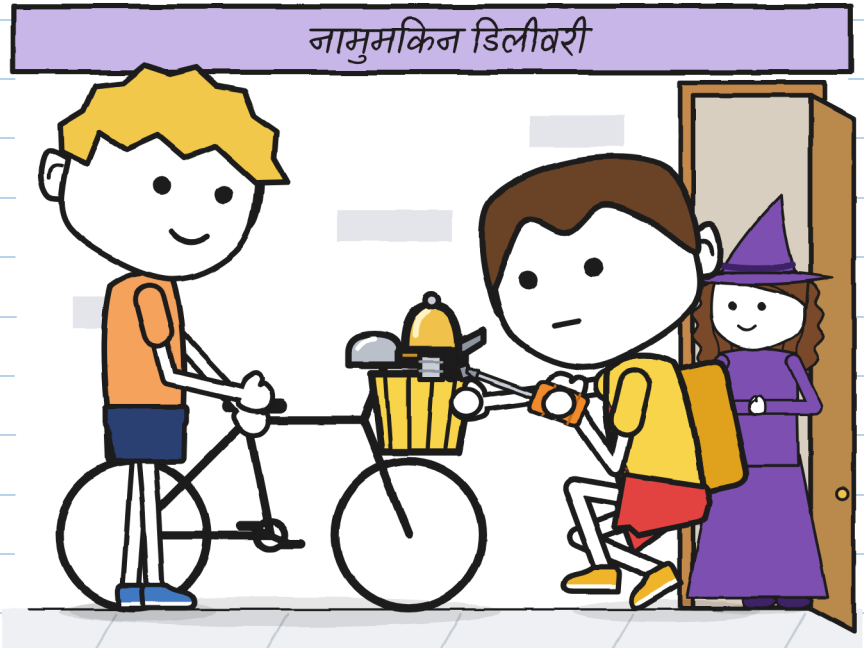
टोन्यो फुटपाथ पर आया। उसने अपनी साइकिल दीवार से टिकाई। उसने बैग से एक पेचकस निकाला।

"क्या तुम घंटी लगाने जा रहे हो?" मैंने पूछा।

"हाँ।"

"और 'बिजली' की बेल?"

"वह 'बिजली' की है। यह मेरी है।"



टोन्यो ने घंटी लगाई। मैंने बस साइकिल थामी, और वह भी उसके कहने पर। टोन्यो ने एक उँगली से हथौड़ी को छुआ।

टिन-टिन।

पाँच बजकर दस मिनट पर "बिजली" गुज़री। ब्रूनो ने ब्रेक लगाया।

"यह क्या बज रहा है?"

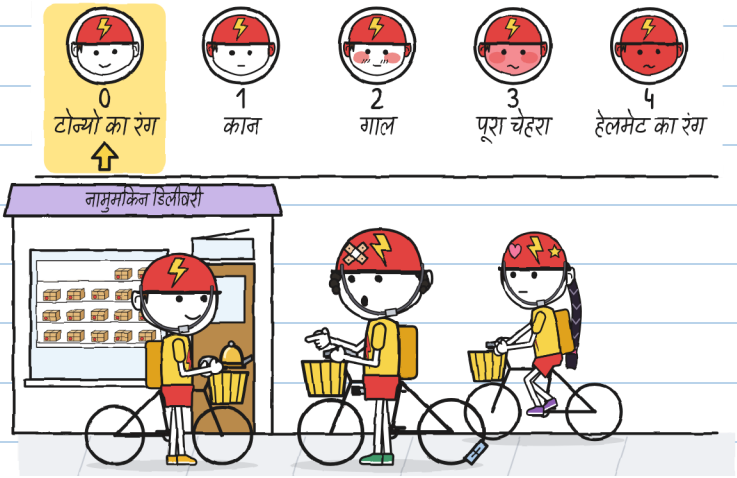
"एक घंटी।"

"कहाँ से आई?"

"यह मेरी थी।"

"जब तुम टोन्यू थे तब की?"

मैंने टोन्यो का चेहरा देखा। ज़रा भी लाल नहीं। कान तक नहीं।



"जब मुझे ऐसे बुलाते थे तब की। अब मेरा नाम टोन्यो है। और तुम्हारा क्या नाम है?"

"पंक्..." ब्रूनो बीच में रुक गया। "ब्रूनो।"

"तो बस, ब्रूनो।"

ब्रूनो ने सिर उठाया। "बिजली" में दो साल से किसी ने उसे ब्रूनो नहीं कहा था।

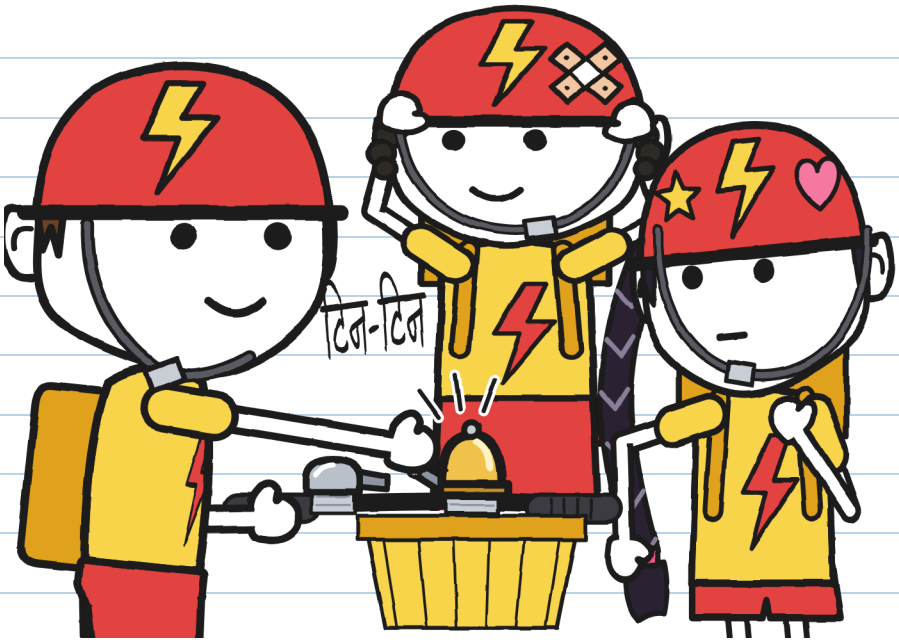
ज़ोई ने मुँह खोला।

टोन्यो ने हथौड़ी को छुआ। एक बार।

टिन-टिन।

ज़ोई ने मुँह बंद कर लिया। सोचा।

"अच्छा बजता है," उसने कहा। "हमें देर हो रही है, टोन्यो।"



उसने कहा "टोन्यो"। बिना कुछ जोड़े। –ज.

उस रात मैंने फिर परदा ऊपर छोड़ दिया।
"फिर निगरानी?" मम्मी ने पूछा।
"आज मैं यह निगरानी कर रहा हूँ कि कुछ न हो।"
"वह तो मुझे बहुत अच्छी तरह आता है। सो जाओ।"



मैं मार्कर खुला रखकर सो गई। मेरा तकिया हरा हो गया है। –ज.

सुबह हुई।
कुछ नहीं बजा।
न टिन-टिन, न कोई खिड़की, न ५ नंबर वाला कुत्ता।
यह सबसे प्यारी ख़ामोशी है जो मैंने अपनी सड़क पर सुनी।



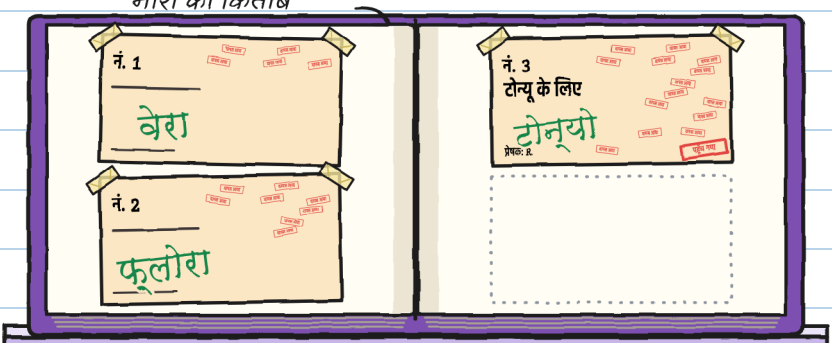
अध्याय 6

फ़िलहाल

शनिवार को, दस बजे, मैंने शेल्फ़ का चित्र बनाया: सत्रह पार्सल और तीन ख़ाली जगहें।

मारा ने लेबल अपनी किताब में चिपका दिया, बाक़ी दो के साथ।

मारा की किताब



एक अंडा, कुछ बीज और एक घंटी। तीनों देर से पहुँचे।
तीनों पहुँचे।

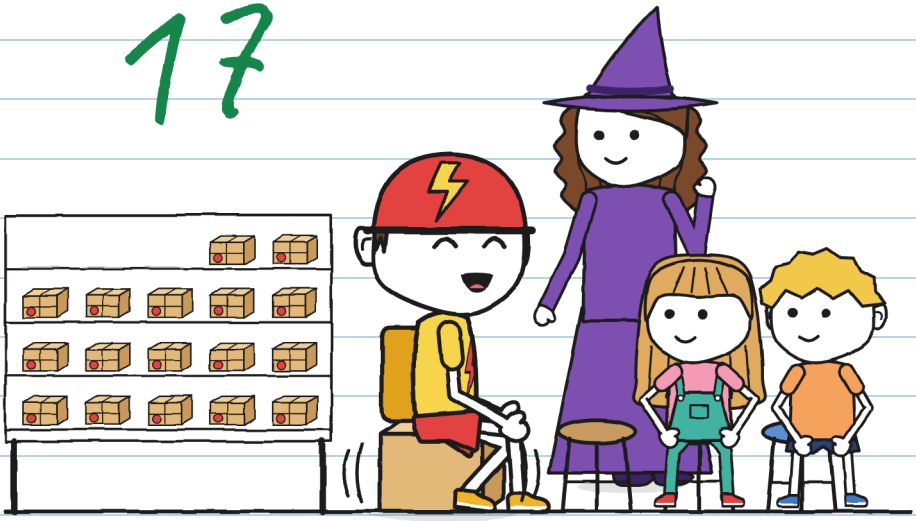
तीसरा टोन्यो ने दस्तख़त किया। इस बार मैंने उसे बस मारकर पकड़ाया। –ज.

टोन्यो अपने बक्से पर बैठा और कसमसाया। इस बार उसने शेल्फ़ की तरफ़ नहीं देखा।

"यह सीट अब भी 'फ़िलहाल' वाली है," मारा ने कहा।

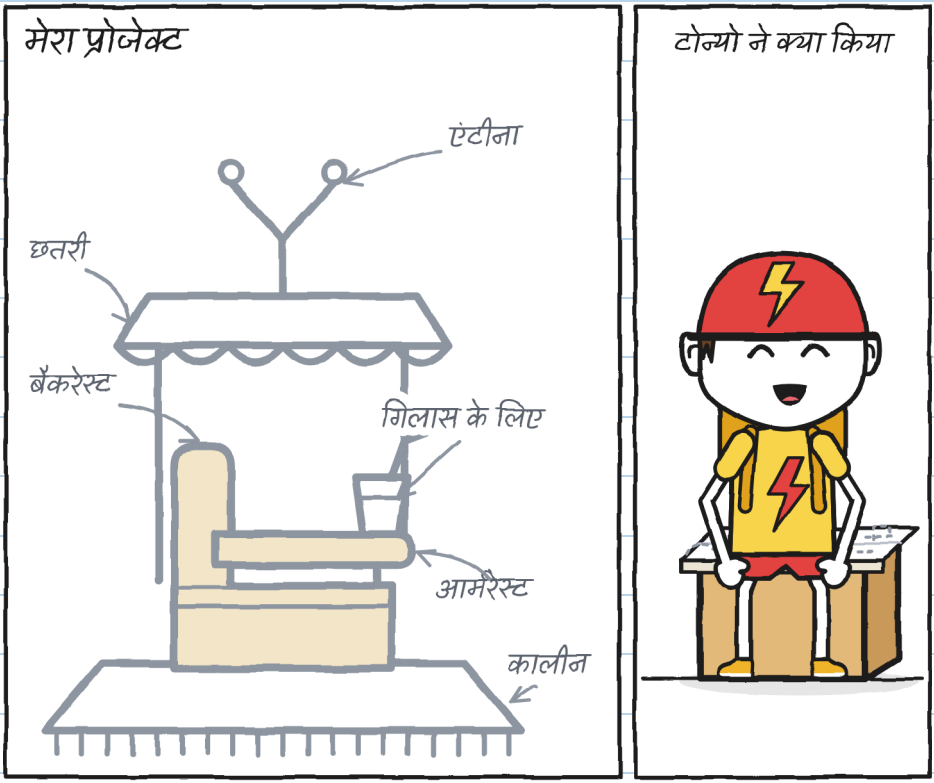
"फ़िलहाल मेरे लिए ठीक है," टोन्यो ने कहा।

बाक़ी
17



"फ़िलहाल" सालों तक चल सकता है। नं. 3 से पूछ लो। –ज.

मैंने टोन्यो को उसकी सीट का अपना प्रोजेक्ट दिखाया। उसमें मेरा पूरा हफ़्ता गया था।



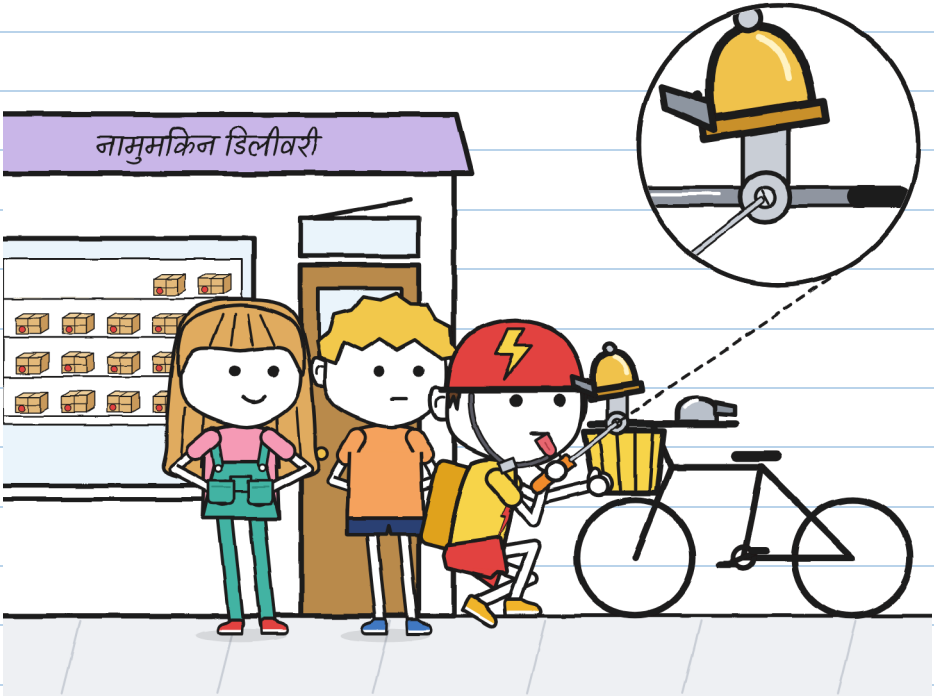
"क्या यह मुझे दे दोगे?" उसने कहा।
उसने चित्र को चार तह किया। उसे डिब्बे पर रखा और उस पर बैठ गया।

बाहर घंटी हैंडल पर टेढ़ी लगी थी।

"तुम कसो, मैं इसे पकड़े रखता हूँ," मैंने कहा।

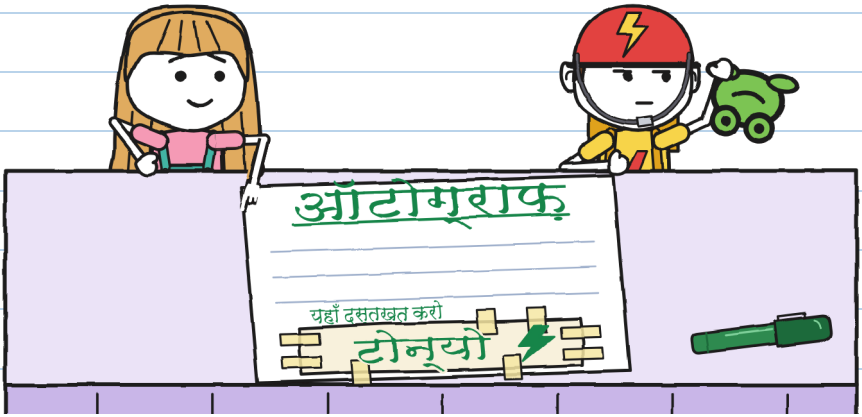
"मैं कर लूँगा।"

उसने कर लिया। मैं उस पेच को देखता रहा। उसमें सौ चक्कर लग रहे थे।



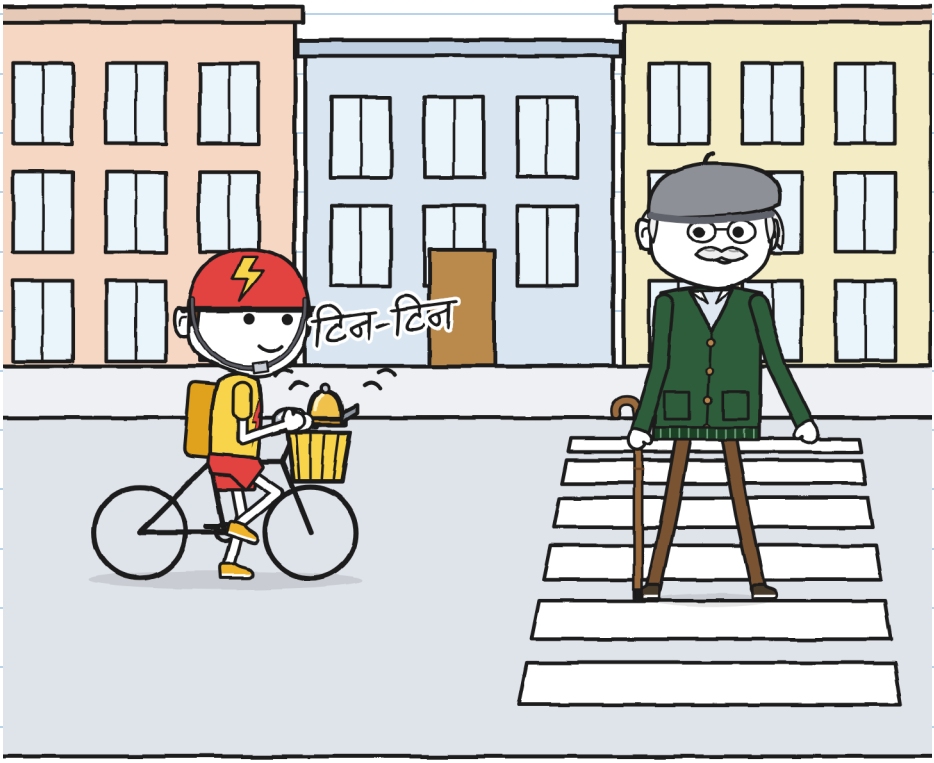
जूलिता ने ऑटोग्राफ़ वाली शीट निकाली। छोटी खिड़की काग़ज़ के पैंच और ढेर सारे टेप से ढकी थी।

"यह वही जाल वाली शीट है," उसने मारा के सवाल का इंतज़ार किए बिना कहा। "मैंने इसे ठीक कर दिया है।"
फिर उसने शीट टोन्यो के सामने रख दी।
"क्या तुम मुझे ऑटोग्राफ़ दोगे? सचमुच वाला। नीचे कुछ नहीं है।"
टोन्यो ने शीट के नीचे देखा। काउंटर के नीचे देखा। उसने मेंढक को उलट-पलटकर देखा।
"ठीक है।"



मैं इसी लायक़ हूँ। –ज.

दोपहर को टोन्यो एक डिलीवरी पर निकला। टोपी पहने एक बुज़ुर्ग अपनी छड़ी के साथ धीरे-धीरे सड़क पार कर रहे थे।
टोन्यो रुक गया। इंतज़ार किया। उसने बस एक बार घंटी बजाई।
जैसे कह रहा हो: "मैं यहाँ हूँ।"
टिन-टिन।



बुज़ुर्ग ने सलाम करने के लिए छड़ी उठाई और अपनी चाल से चलते रहे।

"ये दादा अंतोनियो हैं," मारा ने कहा। "मेरी लिस्ट के दूसरे टोन्यू।"

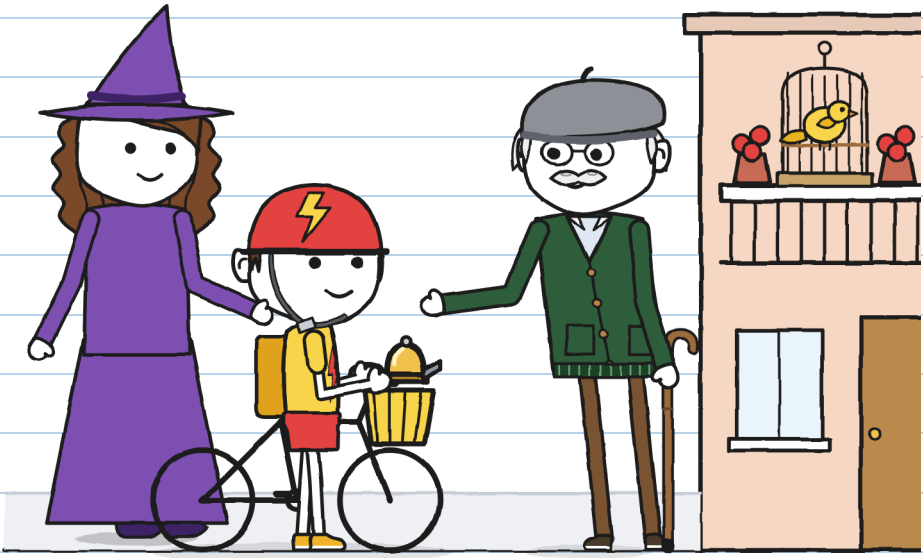
"क्या वह घंटी नई है?" बुज़ुर्ग ने हमारे फ़ुटपाथ तक आकर पूछा।

"पुरानी है," टोन्यो ने कहा। "यह मेरी थी। तब की, जब मुझे टोन्यू कहते थे।"

"मुझे तो साठ साल से किसी ने टोन्यू नहीं कहा। चाहो तो अदला-बदली कर लेते हैं: तुम दादा अंतोनियो, मैं टोन्यू।"

टोन्यो ने सोचा।

"फ़िलहाल नहीं।"



मैंने R. का कार्ड निकाला। उसमें पहले से छह सुराग़ थे। मैंने दो और जोड़ दिए। टोन्यो ने मुझसे पेन माँगा और नीचे अपनी लिखावट में लिखा।

R. के बारे में हम क्या जानते हैं

?

R.

डिलीवरी 2

1–6 (डायरी 2)

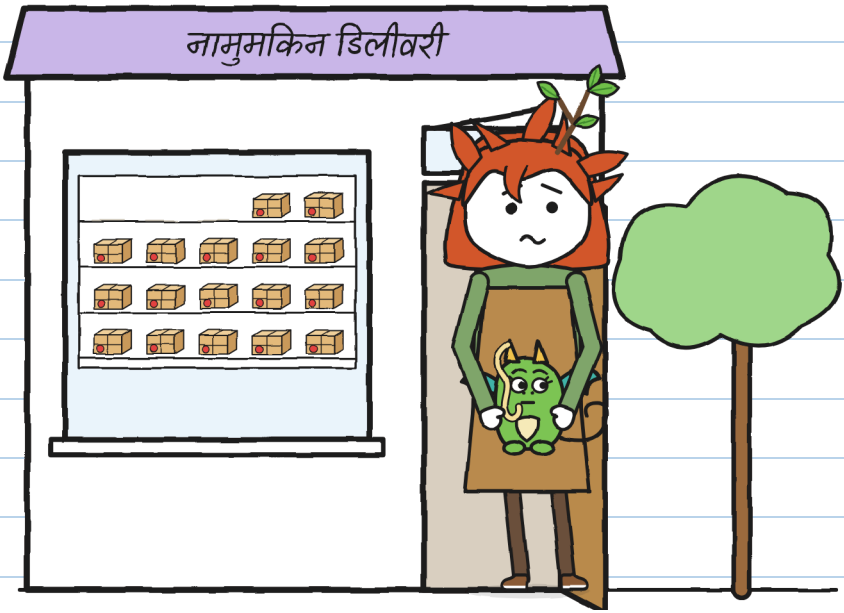
7. जब टोन्यो छोटी साइकिल चलाता था, तब वह उसे जानता था।

8. उसने एक बजने वाली घंटी का वादा किया था। सालों लग गए।

बाक़ी: उसे मुझे सफ़ाई देनी है।

"और तुम उसे धन्यवाद नहीं दोगे?" जूलिता ने पूछा।
"धन्यवाद भी और शिकायत भी। दोनों। जब पता चलेगा कि R. कौन है।"

एक बजे वेरा आई, गोद में चूरा और बालों में एक टहनी लिए। "मदद माँगने आई हूँ। चूरा अब उड़ना सीख गई है। अब उसे उतरने के लिए एक सुरक्षित जगह चाहिए।" वे रुकीं। "कल उसने मेरा सूप चुना।"



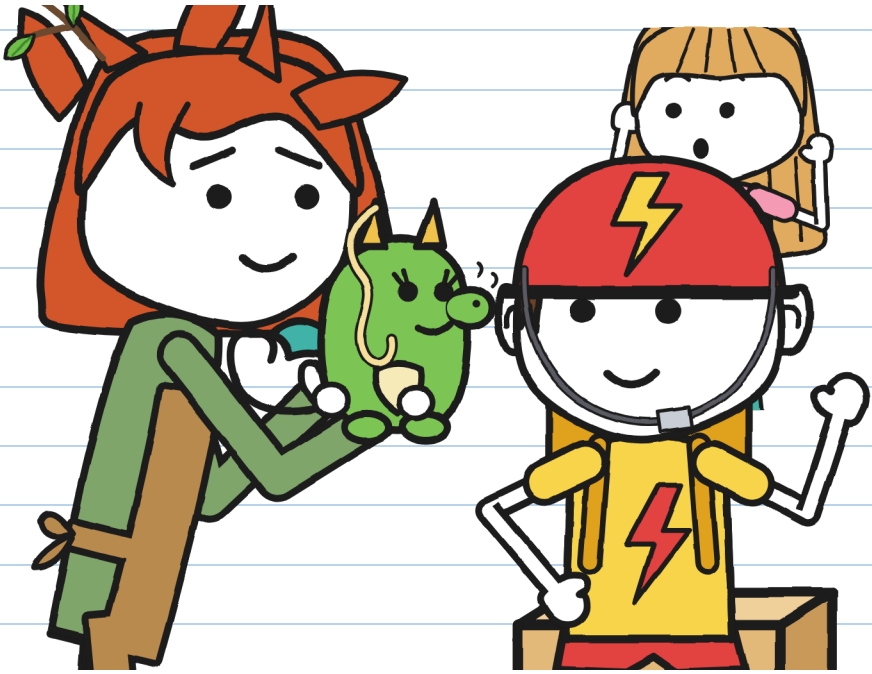
चूरा ने मुझे देखा और मेरी "मैंने नहीं किया" वाली शक्ल बना ली।

तुम्हारी वाली, हू-ब-हू। सेवई समेत। –ज.

"क्या आपको किसी तेज़ आदमी की ज़रूरत है?" टोन्यो ने अपने बक्से से पूछा।

"मुझे ऐसे इंसान की ज़रूरत है जो इंतज़ार करना जानता हो," वेरा ने कहा।

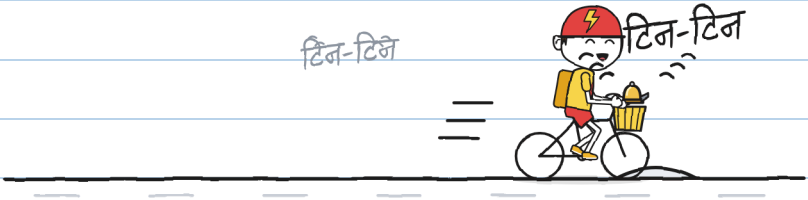
"वह भी जानता हूँ। इसी हफ़्ते से।"



मैं भी इंतज़ार करना जानती हूँ। अब हो गया? –ज.

डिलीवरी नं. 3। हर किसी को कितना समय लगा:

	"बिजली": दस मिनट।
	R.: सालों।
	टोन्यो: छह दिन।
	जूलिता, सुनती हुई: ग्यारह मिनट (रिकॉर्ड)।

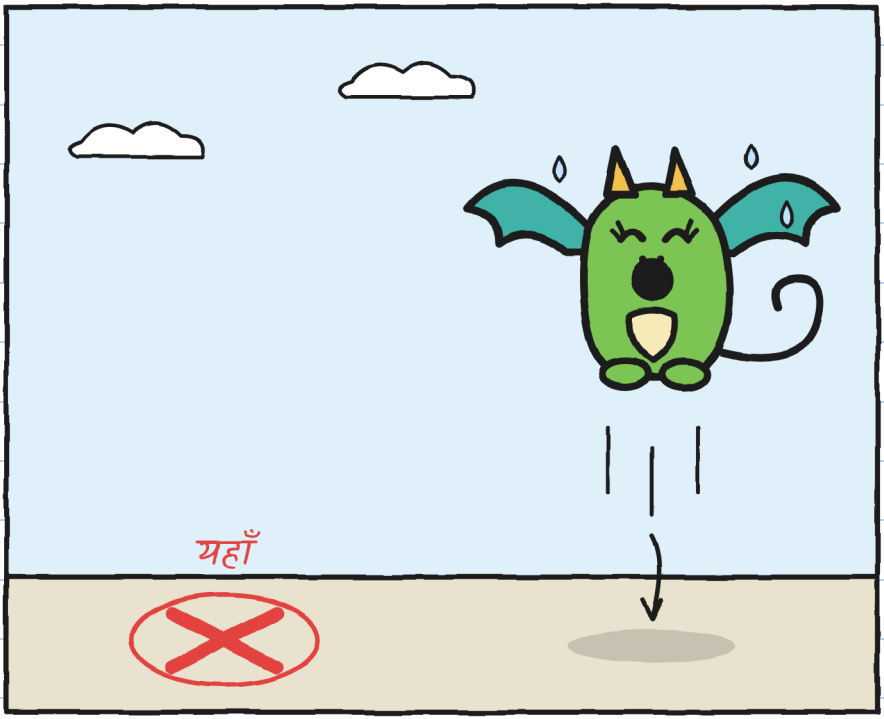


टोन्यो डिलीवरी करने निकल गया। सड़क पर आवाज़ हुई: टिन-टिन। फिर एक और।
इस बार घंटी वह ख़ुद बजा रहा था।

मैं अब भी अकेली बजती हूँ। कोशिश जारी है। –ज.

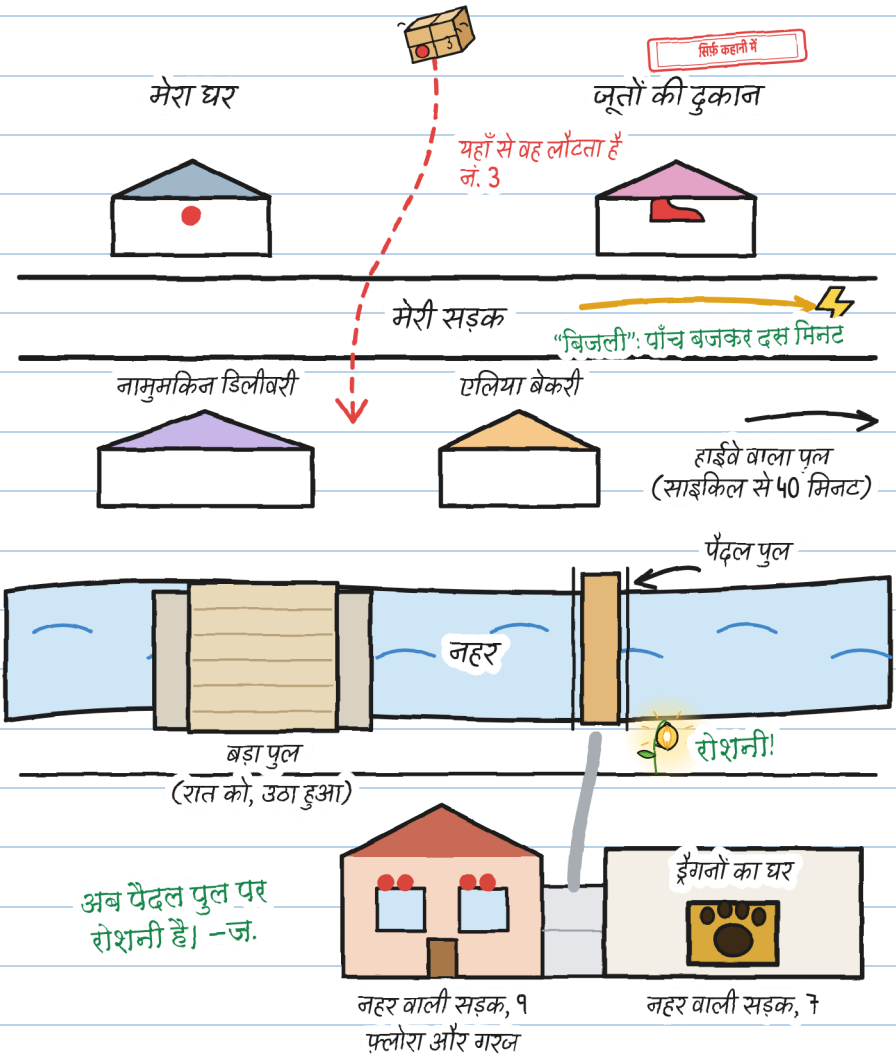
नामुमकिन डिलीवरी · ५

(बहुत जल्द)



ड्रैगन की वह बच्ची कहाँ उतरेगी जो तुम्हारी हर बात की नक़ल उतारती है? –ज.

मोहल्ला (वर्ज़न 3)


सिर्फ़ कहानी में
मेरा घर
जूतों की दुकान
यहाँ से वह लौटता है
नं. 3
मेरी सड़क
"बिजली": पाँच बजकर दस मिनट
नामुमकिन डिलीवरी
एलिया बेकरी
हाईवे वाला पुल
(साइकिल से 40 मिनट)
पैदल पुल
नहर
रोशनी!
बड़ा पुल
(रात को, उठा हुआ)
अब पैदल पुल पर
रोशनी है। –ज.
इंगनों का घर
नहर वाली सड़क, १
फ़्लोरा और गरज
नहर वाली सड़क, ७

और तुम्हें क्या कहकर बुलाएँ?

टोन्यो को टोन्यू कहकर बुलाते थे। अब वह ख़ुद चुनता है कि उसे क्या कहा जाए। और तुम?

मुझे इस नाम से बुलाया जाना पसंद है...

तुम मुझे इस नाम से भी बुला सकते हो...

मुझे इस नाम से न बुलाया जाए तो अच्छा...

मैं जूलिता हूँ। "ज." सिर्फ़ तब, जब मैं दस्तख़त करती हूँ। –ज.

एक कहानी, छह साइज़

इसके छह साइज़ हैं, 3 से 16 साल तक, और 20 से ज़्यादा भाषाएँ। XXS, XS, S, M और L में पन्ने भी वही हैं और चित्र भी वही। XL एक उपन्यास है। बस कहने का तरीक़ा बदलता है।

साइज़ XXS · PRE-A1
मारा और टोन्यो हँसते हैं। क्या तुम्हें लाल साइकिल दिखती है?

साइज़ XS · A1
मारा लगभग हँस पड़ी। टोन्यो भी हँसा। मैंने उसे शनिवार के बाद से हँसते नहीं देखा था।

साइज़ S · A2
मारा ने एक आवाज़ निकाली, लगभग हँसी जैसी। टोन्यो भी हँस पड़ा। मैंने उसे शनिवार के बाद से हँसते नहीं देखा था।

साइज़ M · B1
मारा ने एक आवाज़ निकाली। वह हँसी जैसी थी। टोन्यो भी हँस पड़ा। मैंने उसे शनिवार के बाद से हँसते नहीं देखा था।

साइज़ L · B2
मारा ने ऐसी आवाज़ निकाली जो किसी और के मुँह से हँसी होती। टोन्यो भी हँस पड़ा। मैंने उसे शनिवार के बाद से हँसते नहीं देखा था।

साइज़ XL · B2–C1
सचित्र उपन्यास · 13+

CEFR के स्तर केवल मार्गदर्शन के लिए हैं।

सबका अपना साइज़। टिन-टिन वही। —ज.

परिवारों और शिक्षकों के लिए

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com पर करो

असली साइकिल: क्या करें

1. हेलमेट हमेशा, और ठीक से बँधा हुआ। "बस यहीं पास तक जाना है" हो तब भी।
2. ऐसे चलो कि लोग तुम्हें देख और सुन सकें: लाइटें, चमकीले कपड़े और बेल। बेल सावधान करती है; हुक्म नहीं चलाती।
3. हैंडल पर दोनों हाथ। अगर कुछ तुम्हारा ध्यान भटकाए, तो किसी सुरक्षित जगह पर रुको।
4. फ़ुटपाथ पैदल चलने वालों का है: वहाँ साइकिल हाथ से पकड़कर पैदल ले जाओ। सड़क पार करने से पहले रुको और देखो।

"सिर्फ़ कहानी में" वाली मुहर बताती है कि कहानी में क्या होता है, सड़क पर नहीं।

निकलने से पहले अपनी साइकिल जाँचो

